# ।। प्रसंग के अंग ।।

## मारवाडी + हिन्दी

*

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

**|| अथ प्रसंग के अंग के कुछ श्लोको का अनुवाद ||**

**शब्द नगर सुखराम केहे || अर्थ गेल सब जाण ||१||**

सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि,यह जो शब्द(ज्ञान)है,वह एक बडा शहर है । उस शब्द का(ज्ञान का)जो अर्थ है,वह शहर के सभी रास्ते और गलियाँ है,(शहर एक रहता है, परन्तु उसमे रास्ते और गलियाँ बहुतसी होती है,वैसे ही शब्द(ज्ञान)एक है,परन्तु उसका अर्थ अनेक प्रकार से),जिसे जिस दिशा की चाहत होगी,वह वैसा ही अर्थ करके बताता है ।(जैसे शहर मे कोई,किसी रास्ते से,तो कोई किसी गल्ली से,उन्हे जिधर जाना होगा,उधर ही जाते है । जैसे शहर मे,सब अपने-अपने मतलब के अनुसार,या कोई राज दरबार मे जाता है,तो कोई जवाहीर खरीदने वाला,जौहरी बाजार मे जाता है,कोई सोना-चांदी खरीदनेवाला,सर्राफ बाजार मे जाता है । कोई कपडा खरीदनेवाला,कपडे की बाजार मे जाता है,इसप्रकार से अपने-अपने काम के अनुसार,बाजार मे जाते है । जैसे कोई चमार,चमार टोल मे जायेगा । कोई मेहतर अपने जातीवाले मेहतर के ही घर जायेगा । अब शहर मे तो सभी लोग गये और शहर से आये भी,पूछने पर वह क्या बतायेगा । क्यो कि उसे,चमडा खरीदने का-बेचने का काम था,इसलिए वह चमारो की वस्तीमे गया था,वह राजदरबार की या बडे-बडे सेठ,साहुकार के घर की घटनाए,क्या बतायेगा?क्यो कि उसने,वहाँ यह सब देखा ही नही । शहर का किला कैसा है, उसमे फौज कैसी है,यह सब बिना देखे,वह क्या बता सकेगा । उस मेहतर से,वह उत्तर देगा, कि,हाँ मै शहर जाकर आया । परन्तु सारी बाते,वह बता नही पायेगा । इसीप्रकार से शब्द का,संतो की वाणी का अर्थ,अपने मतलब के अनुसार किया । वे ज्ञान की गहरी बाते,क्या बता सकेगे । तो अपने मतलब के अनुसार,सब अर्थ पकडकर बैठ गये । अपनी-अपनी चाहत के अनुसार,शहर मे जिधर मतलब होता है,उधर जाते है । वैसे ही वाणी का,वह बास्तविक बता नही सकता है । वैसे ही संतो के शब्द का(ज्ञान का)अर्थ,अपनी बुद्धि के अनुसार करते है ।) || १ ||

**सातस चरचा कीजीये || तामे सुख अपार ||**

**तामस मे सुखराम के || बोहो दुख उपजे लार ||२||**

सात्विकता पूर्वक चर्चा करनी चाहिए । चर्चा सात्विकता पूर्वक करने मे,अपार सुख है और तामस से चर्चा करने मे बाद मे बहुत प्रकार के,दु:ख उत्पन्न होते है ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ||२||

**सातस चरचा ज्यां हुवे || तां सूं रत सब कोय ||**

**संवादे सुखराम के || तामस बिना न होय ||३ ||**

जहाँ सात्विकता पूर्वक चर्चा होती है उससे सब कोई लगे हुए रहते है परन्तु सम्वाद तो तामस के बिना होता नही । सम्वाद करने मे तामसिक भाव लाकर ही,सम्वाद करना

चाहिए । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।।३।।

**दोय जन्म की गुष्ट हे ।। पांच सात को ग्यांन ।।**
**अेके को सुखराम क्हे ।। सुंणो निरंजन ध्यान ।।४।।**

बात करनी होगी तो दोनोने ही एकांत मे करनी चाहिए।(बात करनेमे तिसरा नही होना चाहिए) और ज्ञान बताना हो तो कम से कम पाँच सात मनुष्य तो रहने ही चाहिए ।(दो चार को ज्ञान बताने के लिए ज्ञान बताने वाले का मन नही करता है इसलिए आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है कि ज्ञान मे सुनने वाले मनुष्य जितने अधिक होगे उतना ही कहने वाले का मन खुलेगा । परन्तु आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है कि ध्यान करने मे अकेला ही होना चाहिए । ध्यान करने मे तो दूसरा साथ मे रहना काम का नही । ।। ४ ।।

**समता की सुण गुष्ट हे ।। ग्यान तेज को जाण ।।**
**चरचा हुये सुखराम क्हे ।। अर्थ भिडावे आण ।।५।।**

बात करने मे समता शांती रखनी चाहिए ।(समता यानी भृगुने लात मारा,उस समय विष्णू ने,जैसे समता रखी थी,उसे समता कहते है ।)ऐसी ही समता,बात करने आती है ।)ज्ञान तो तेजी मे आकर ज्ञान दोगे तभी दिया जायेगा और चर्चा तभी अच्छी होगी,कि,इधर से उधर से लाकर,अर्थ भिडाओगे तभी चर्चा अच्छी होगी । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।। ५ ।।

**साची कह्यां जक्त रीसावे ।। झूठ कह्यां हर सोई ।।**
**क्हे सुखराम कोण बिध बोलूं ।। सोच रह्यां मन मोई ।।६।।**

सत्य कहने से,संसार के लोग नाराज होते है और झूठ कहने पर रामजी नाराज होते है, आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि अब मै किस तरह से बोलू ? यह मेरा मन,फिक्र कर रहा है । ।। ६ ।।

**पाखंड की सेवा कियां ।। सेवग तिष्टे नाँय ।।**
**पेली विटंबे जक्त मे ।। पीछे नरकां जाय ।।७।।**

पाखण्ड की सेवा करने वाले सेवक,तिष्ट(फलित)नही होगे । पाखण्ड की सेवा करने वाले की,पहले जगत मे ही विडंबना हो जायेगी और बाद मे(पाखण्ड की सेवा करने वाले),नर्क मे जायेगे । ।। ७ ।।

**पाखन्ड पाखन्ड कहत हे । जक्त भक्त सब लोय ।।**
**बूजे युं सुखराम क्हे ।। पाखन्डी कुंण होय ।।८।।**

जगत के भक्त और जगत के लोग,ये सब पाखण्ड कहते है परन्तु मै पूछता हूँ ,कि पाखण्डी कौन और कैसा होता है ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।।८ ।।

**किम पाखन्ड किम साच हे ।। तां को कहो बिचार ।।**

**निरपखे सुखरामजी || कहिये शबद उचार ||१||**

पाखण्ड क्या है और सच्चा क्या है इसका विचार करो । निरपक्ष होकर अपना पक्ष छोडकर, यह ज्ञान बताओ ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । || ९ ||

**प्रम पद कूं बीसरे || दर्सण उर मम चाय ||**
**गेहे माया के वास्ते || धामी धाम बताय ||२||**

परम पद को तो भूल गये और मेरे हृदय मे परमपद के दर्शन की चाहत है ऐसा कहता है और माया के लिए धाम पकडकर बैठे है जिस संत का धाम है,वे संत स्वयम ही धाम ही है धाम पर रहनेवाले धामी धाम को ही संत बताते है तो धाम है यही पाखण्ड है और जो सदेह संत है वही सच्चे धाम है ।)(पूर्वकाल मे दर्यावजी साहेब के समय दर्यावसाहेब के शिष्य पूरणदासजी का दर्यावजी साहेब के सामने ही,शरीर छूट गया । तब पूरणदासजी के शिष्य ने,पूरणदास के मृत शरीर के उपर,पत्थर की समाधी बनायी । यह बात जब दर्यावसाहेब को मालुम पडी तो दर्यावजी साहेब उस समाधीके पास जाकर पूरणदासजी के शिष्यो से कुदाल लाने के लिए कहाँ तो पुरणदासजी के शिष्योने कुदाल ला दी । उस कुदालसे स्वयं दर्याव साहेबने अपने हाथो से समाधी का पत्थर खोदकर फेंक दिया और बोले,कि,पूरण क्या इस पत्थर मे धँसा है क्या?पूरण तो निजधाम मे गया । सिर्फ कहने के लिए,शब्दो मे रह गया है । इस प्रकार से कहकर समाधी के सारे पत्थर खोद डाले । यह घटना दर्यापंथी साधू लोग अभी भी जानते है ।) || १० ||

**तीन जुग मे रहत है || खट दर्सण मत सार ||**
**चोथे मे सुखरामजी || भूले पद बिचार ||४||**

तीन युगो मे छ:दर्शन यानी पाँच तत्व की देह और उस देह के अन्दर,छठवाँ संत की ज्ञानी आत्मा,इस प्रकार से पाँच तत्व और ज्ञानी आत्मा मिलकर छ:दर्शन)तीन युगो मे उस संत का मत सार रहता था । परन्तु इस चौथे कालियुग मे उस संत पद के विचार को लोग भूल गये उस संत के पद को न मानते हुए संतो की समाधी पूजने लगे ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।११ ।

**बिरली जागा रहत हे || निपट न नासत कोय ||**
**कळ जुग मे सुखराम क्हे || पाखन्ड पूजा होय ||५||**

अभी भी बिरली जगहो पर सतगुरू संत की सेवा,(पाँच तत्व की देह और छटवाँ ज्ञानी आत्मा इस प्रकारसे छ:दर्शन यानी देह के साथ संत की सेवा)जगत मे होती है । यह छ:दर्शन की सेवा एकदम से कोई नाश नही हुयी परन्तु इस कलियुग मे पाखण्ड(धाम,स्मशान,कब्र,चबुतरा वगैरे)की पूजा होती है । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । || १२ ||

**पांच तत्त को रंग हे || सो द्रसण सिर होय ||**

**वां बेमुख सो भेक रे ।। से पाखन्ड सब कोय ।।६।।**

पाँच तत्वो का रंग(आकाश का काला,वायु का हरा,अग्नी का लाल,पानी का सफेद और पृथ्वी का पीला)है । और दर्शनो का रंग सन्यासी का काला,फकीर का हरा,योगी का पीला,जंगम का लाल और ब्राम्हण का सफेद,ये रंग दर्शनो के है । इनसे विमुख सभी भेष है ये सारे पाखण्ड (धाम,स्मशान,कब्र,चबूतरा)है,ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।। १३ ।।

**सेवा पूजा धर्म सो ।। ओ बाहिर दिख लाय ।।**
**तां ते ढोली रहत हे ।। गुर सेवा जुग माय ।।७।।**

और दूसरे जो सेवा,पूजा,धर्म बाहर दिखलाते है, ये सब सेवा,पूजा करने वाले ढोली मतलब ढोल बजानेवाला जैसा ढोल बाहर से बजाता है वह ढोल अन्दर से खोखला होता है वैसे ही इनकी सेवा,पूजा अन्दर से खोखली होती है । सतस्वरुप गुरू की सेवा के अलावा दूसरी सेवा करनेवाले,ढोल बजानेवाले के जैसा खोखला रह जाते है ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले ।। १४ ।।

**ज्युं ज्युं दिन आडा पडे ।। त्यूं त्यूं बुध कम होय ।।**
**गूर पूजा जुग रहत है ।। तांहा पद बिसरे लोय ।।७।।**

जैसे–जैसे संतो के बाद मे दिन बीतते जाते है वैसे–वैसे बुद्धि कम–कम होती जाती है । सतस्वरुपी गुरू की पूजा जगत मे रहती है । उस पद को लोग भूल जाते है । (सतस्वरुपी गुरू के बाद गुरू के समाधी की लोग पूजा करने लगते है ।) ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले ।।१५ ।।

**बूजत हुँ अेक बात बिचारा ।। ज्ञानी हुवे सोई कान धरीजे ।।**
**जीव सो बस किणे गेह राख्या ।। तांहि को जाब सबब करिजे ।।१६।।**
**ऊँच कुं नीच निचे कूं ऊँच मिले किम मोजा ।। ऊचो किम घेर रसातळ दीजे ।।**
**सोच बिचार कह सुखदेवजी ।। जीव को खोज बिचार ज्युं कीजे ।।१७।।**
**को होजी जीव किणे बस डोले ।। खाय पिये सोइ कोण के सारा ।।**
**करणी काम सबे सुख संपत ।। किम मिले सब अर्थ बिचारा ।।१८।।**
**जीव के बस हे कन नांही ।। करणी काम सबे जुग लारा ।।**
**युं सोच बिचार कहे सुखेदवजी ।। से अर्थ करे सोई गुरू हमारा ।।१९।।**
**गरिबी को मत यह हे ।। रहे सकळ सो लीन ।।**
**मत वाळो सुखराम क्हे ।। सब सुं सम तत्त चीन ।।९।।**
**अंग साराई साच हे ।। सब ही झूठा होय ।।**
**जन ने पारख सुखराम क्हे ।। शब्दां मे कण जोय ।। १०।।**

**रंग रूप जुग स्वाद हे ।। अे इनका सब होय ।।**
**पाँच तत्त सुखराम क्हे ।। ब्रम्ह शिव हर जोय ।।८।।**

संसार मे जो रूप और रंग तथा स्वाद है वो सब इन पाँच तत्वो के है और इन पाँच तत्वो से ही ब्रम्हा,विष्णू और महादेव भी है । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले ।। १६ ।।

**यां बांधी मर्जाद कूं ।। खट दर्सण सेंसार ।।**
**सो गुण मुख ते ऊथपे ।। आपा पंथ विचार ।।९।।**

इन पाँच तत्व और छठवाँ सत ज्ञान इन छ:वो से बने हुए संत ने ही संसार मे मर्यादा बाँधी है । तो इनका गुण उथापकर अपने मत के पंथ का स्थापन करते है । ।।१७ ।।

**बीजा बोहोता भेष ने ।। खट दर्सण कि जोय ।।**
**मुख ते सुंण राखे नही ।। युं पाखंड नर होय ।।१०।।**

लोग कोई भी वेषधारीयो को देखकर उसे षटदर्शन कहते है । तो पाँच तत्व के देह के संत और छठवाँ उस संत की ज्ञानी आत्मा इस प्रकार से ये दर्शन हुए)तो इस दर्शन को नही मानते है और धाम को(संत की समाधी को)मानते है,तो ये सभी पाखण्डी है । ।। १८ ।।

**पाच तत्त बिन जुग मे ।। रूप स्वाद नही कोय ।।**
**तीन देव सुखरामजी ।। सकळ लोक सिष होय ।। ११।।**

इस पाँच तत्व के बिना स्वाद भी नही है । ये देव और लोग,हे शिष्य,इस पाँच तत्व से ही बने है । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले ।। १९ ।।

**ग्यान ध्यान सब बांत सो ।। नाना बिध की लोय ।।**
**आद मुळ ब्रम्हा ।। पांच तत्त गुण जोय ।। १२।।**
**केणे मातर बात थी ।। सो सब कही अनाद ।।**
**पीछे दुज की बुध ले ।। कहे सकळ जुग साद ।।१३।।**
**पांच तत्त का पींजरा ।। ब्रम्हा की सब मान्ड।।**
**दर्सण गुण मुख ऊथपे ।। सो नर पाखन्ड भान्ड ।।१४।।**
**एक घड़ी इण बाहेरो ।। प्राण न जीवे कोय ।।**
**सो गुण मुख ते ऊथप्या ।। मुक्त कहांते होय ।।१५।।**
**जां हा पाँचू तहां आप हे ।। ओम सिरजण हार ।।**
**यां पुजा तम कीजीयो ।। मम देह रूप बिचार ।।१६।।**
**पाँच तत्त अे अेखटा ।। बोले प्रगट आय ।।**
**आतम मे प्रमात्मा ।। सब सुर पोख्यां जाय ।।१७।।**
**मम देवो मम आतमा ।। में ही सिरजण हार ।।**
**मम ऊपर प्र ब्रम्ह हे ।। सो कुछ तारण मार ।।१८।।**

**।। छंद भुजंगी ।।**

**बोहो रंग मोई मे तुमेर माया ।। ततो स्याम भवना सुपे नाही गाया ।।**
**संगी कोय नाही सबे हेत देही ।। गह्यो प्राण दूतां खीसे बाळ खेही ।।१।।**

**।। साखी ।।**

**ध्रम पुन्न और नांव मे ।। सीर सकळ को होय ।।**

गुरू ध्रम तो सुखराम क्हे || दुज बिन फळ न कोय ||१||
ब्राम्हण बिन गुर करत हे || से हर अग्या मेट ||
वे सब ही सुखराम क्हे || जाय नरक मे पेठ ||२||
चार बरण पेदा किया || तां दिन बांधी मेर ||
दुज बिन सुण सुखराम क्हे || हर गुर किया न फेर ||३||

**करणी जीवां हात दी || फळ करणी के मांय ||**
**इण कारण सुखराम क्हे || सुख दु:ख भुक्ते आय ||४ ||**

करणी करना जीवो के हाथ मे दिया और उस करणी मे जैसी करणी होगी वैसा फल होता है । इस करणी के फल भोगने के कारण,(जीव जगत मे आकर,सुख और दु:ख भोगते है । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले ||२०||

**ग्यान सकळ कू दीजीये || अड़ नही कीजे कोय ||**
**मंत्रर तो सुखराम क्हे || दीजे जागा जोय ||३८||**

ज्ञान तो सबको दो,परन्तु वह ज्ञान देने मे अड्कर किसी से वाद-विवाद करो मत । ज्ञान तो सबको दो,परन्तु मंत्र तो जगह देखकर(पात्र देखकर)दो,जो मंत्र का अधिकारी हो,उसी को मंत्र देना चाहिए ।(नही तो कुपात्र को मंत्र देने पर वह मंत्र का दुरूपयोग करेगा क्यो कि सारे जीव एक जैसे नही होते है । जैसे वनस्पतीयो के वृक्ष अलग-अलग प्रकार के होते है वैसे ही मनुष्यो की आत्माए भी अलग-अलग प्रकार की होती है ।)ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले || २१ ||

**राम नाव तो नीर ज्यूं || आतम सुंण बन होय ||**
**गुण न्यारो सुखराम के || फल लागे जब जोय ||५||**

यह राम नाम तो पानी की तरह है और जगत के मनुष्य पानी की तरह है और जगत के मनुष्य पानी की आत्मा,वन की तरह(वृक्षो की तरह है । तो पानी जिस पेड को दोगे,तो उस पेड के अनुसार,फल लगेगा । पानी से सिर्फ वृक्ष बढेगा और फल अधिक लगेगे,परन्तु फल तो उस वृक्ष के अनुसार लगेगा । पानी तो सभी वृक्षो पर,एक जैसे आकाश से पडता है और कुएँ का पानी भी,सभी वृक्षो को,एकही कुएँ का पानी देते है,परन्तु उस पानी का गुण,जैसा वह पेड होगा,उसके अनुसार ही,उस पानी से फल लगेगा । उस एक ही कुएँ का पानी,गन्ने को दिया जाता है,तो वह मीठा होता है । उस कुएँ का पानी,मिर्ची को देने पर,वह तीखी होती है । उस कुएँ का पानी,मेथी को दिए,तो वह कडवी होती है । उसी कुएँ के पानी को,प्याज और लहसुन को देने पर,वे दुर्गन्धयुक्त होते है । उसी कुएँ का पानी,सांबर,पुदीना,गुलाब,मोगरा,केवडा, जाई,चंपा,चमेली आदी को देने पर,सुगन्धित फूल और पत्ते निकलते है और उसी कुएँ के पानी को,अद्रख को देनेपर,वातनाशक अद्रख उत्पन्न होता है । और बादलो का पानी,इमली और आम पर एक

ही पानी पडता है,परन्तु उसी पानी से,इमली के पेड मे खट्टे फल लगते है और आम के पेड से,मिठे स्वादिष्ट फल प्राप्त होते है । नीबू के पेड पर भी,वही पानी पडता है,तो उसे खट्टे फल आते है । उसी पानी से नींब के पेड से,कडवे पत्ते निकलते है । और चीकू के पेड से,स्वादिष्ट चीकू मिलते है । इसीप्रकार से,तरबूज की लता मे,बडे फल लगकर, मीठे और ठंढे गुणवाला फल लगता है । और डांगरा(फूँट)की लता मे,फूँट लगते है और शेरणी(गुम्हीं)की बेल मे,एकदम छोटे फल लगते है,उसी कुएँ के पानी से,करैला एकदम कडवा पित्तकारक होता है । उसी कुएँ के पानी से,अननस के वृक्ष से,एकदम खट्टा फल प्राप्त होता है । अनार के पेड से,पित्तनाशक अनार लगते है । इसप्रकार से तो,सभी पेडो को एक ही पानी मिला,जिससे वे बढकर,उन्हे फल भी बहुत लगे,परन्तु वे फल,उस वृक्ष के अनुसार ही लगे ।) इसीप्रकार से राम नाम पानी के जैसा है,संसार मे आत्माएँ(मनुष्य जीव),वन के जैसे है ।(वृक्ष की तरह है),जैसे पानी से पेड मे फल,उस पेड के अनुसार आते है,वैसे ही मनुष्य को भी,राम नाम से,उस मनुष्य की आत्मा के अनुसार फल मिलेगा ।(यह राम नाम मंत्र,जगह देखकर (पात्र देखकर ही)देना चाहिए,नही तो इस(राम नाम)मंत्र का,मनुष्य अपनी आत्मा के अनुसार ,दुरूपयोग करेंगे । यही राम मंत्र आडंबरी(लोगो को बडप्पन का फैल,ढोंग बतानेवाले) मनुष्य,राम नाम का रटन इसलिए करेगा,कि,मुझे लोगो ने संत कहना चाहिए,मुझे मान मिलना चाहिए,मेरी पूजा होनी चाहिए,इसी के लिए वह आडंबरी,राम नाम का रटन करेगा । यही राम मंत्र,व्यभिचारी साधू के हाथो मे गया,तो वह राम नाम का सुमिरन इसलिए करेगा, कि,स्त्रीयाँ मेरे पास आनी चाहिए और मुझसे व्यभिचार करना चाहिए । इसी के लिए व्यभिचारी,राम नाम का रटन करेगा । कितने ही साधू,राम नामका रटन इसके लिए करेगे,कि,राम नाम रटते हुए,लोग मुझे देखे,मुझे अच्छा खाने के लिए भोजन दे । और कपडे लत्ते दे । इसलिए ये लोगो को दिखाने के लिए,राम नामका रटन करेगे । और उन्हे देखनेवाला नही रहा,तो वे मुँख से राम नाम की अक्षर भी नही निकालते । बाकी कितने ही सब,अपने-अपने स्वार्थ के लिए,राम नाम का रटन करते है । और यही राम मंत्र,चोर को देने पर,वह रामजी से यह प्रार्थना करेगा,कि,हे रामजी,मेरे हाथो मे कोई चोरी मिले और यही राम मंत्र,जुवारी को देने पर,वह जुवारी मुक्ती या मोक्ष न माँगते हुए,मुझे जुवे का दाव जीता दो और कोर्ट-कचहरी मे झगडा-फसाद करनेवाला मनुष्य,यह राम नाम मंत्र पाया,तो वह रामजी से,यह प्रार्थना करेगा,कि,हे रामजी, मुझे अमुक मुकद्दमा जीता दो । ऐसा कहेगा,परन्तु मुक्ती मोक्ष या दुसरा कुछ भी नही माँगेगा । और कामी मनुष्य को,यही राम मंत्र देने पर,वह रामजीसे,यह प्रार्थना करेगा,कि,हे रामजी, फलाने स्त्री से,मेरी प्रिती लगा दो । और जिसे पुत्र की चाहत होगी,उसे यह राम मंत्र दिया,तो वह रामजी से प्रार्थना करके,पुत्र ही माँगेगा । और जिसे अपनी या अपने पुत्र की शादी की चाहत होगी,उसे यह राम मंत्र

दिया,तो वह अपनी या अपने पुत्र की शादी करा देने के लिए ही,रामजी से प्रार्थना करेगा । किसी लोभी को धन की चाहना है और उसे यह राम मंत्र देने पर,वह राम नाम का सुमिरन करके,उसके बदले मे,रामजी से धन ही माँगेगा और किसी को कोई दु:ख या शरीर मे व्याधी रोग है,तो वह राम नामका सुमिरन करके,दु:ख या व्याधी,रोग अच्छा करने की ही,प्रार्थना करेगा । परन्तु निष्काम भक्ती कोई भी नही करेंगे । जिसे नाती चाहिए,वह भक्ती करके,रामजी से नाती ही माँगेगा । और किसी का कोई वैरी या दुश्मन होगा, वह उस वैरी का नाश करने के लिए,रामजी से प्रार्थना करेगा । परन्तु रामजी इसके कहने से, किसी का नाश करेगे क्या? वे तो किसी का भी,नाश नही करेंगे । परन्तु यह तो भक्ती करके,अपने वैरी का नाश करने का हुक्म,रामजी पर फर्मा देगा । और कईएक पापी मनुष्य, पाप कटने के लिए ही,राम नामका सुमिरन करेंगे । ये सब मनुष्य,अपनी चाहत के अनुरूप, फल माँगकर,भक्ती को सकाम कर देगे । तो ये जैसे-जैसे आत्मा है,वैसे-वैसे,जैसे पानी से वृक्ष मे फल लगते है,वैसे-वैसे इन्हे भी राम नामसे,आत्मा के अनुसार,यहाँ यदी फल लगा नही,तो बाद मे आत्मा के अनुसार,यहाँ यदी फल लगा नही,तो बाद मे भोगना पडेगा,राम नामका गुण,उनकी-उनकी आत्मा के अनुसार फल लगेगा,यह सकाम भक्ती करना बहुत बुरा है,हम किसी बडे आदमी को,छोटा काम करने के लिए नही कहते है । जैसे बडे आदमी से,मेरे यहाँ झाड पोछ करके दो या बर्तन धो दो आदी छोटे काम करने के लिए,नही कहते है । और यदी किसी बडे आदमी से,छोटे काम करने के लिए बोले,तो वह नाराज हुए बिना नही रहेगा । बडे आदमी को छोटा काम तो क्या,बडा काम करने के लिए भी नही कह सकते । बडा आदमी,धन से या मान से या पदवी से या ज्ञान से या उम्र से बडा होगा,तो इसे बडा जानना चाहिए । तो ऐसे बडे आदमी को भी,कोई बुद्धिमान मनुष्य तो,कोई काम करने के लिए कहेगा नही,परन्तु राम मंत्र का जप करने वाले,सकाम भक्त तो,रामजी को चाहे,जो छोटा-मोटा काम करने के लिए कहते है । तो रामजी से काम करने के लिए कहते है,तो राम नामका सुमिरन करके,रामजी को इन्होने(काम बतानेवाला),नौकर तो नही रख लिया । या रामजी इनके गुलाम तो नही हो गये । परन्तु ये अपनी कुबुद्धि से,राम मंत्र का सुमिरन करके,रामजी से चाहे वैसा काम करने के लिए कहकर,राम मंत्र का दुरूपयोग करते है,इसीलिए सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि,ज्ञान तो सबको बताओ(दो),परन्तु मंत्र तो जगह देखकर ही(पात्र देखकर ही)देना चाहिए ।) || २२ ||

**आतम जाण न पूजीये || सब ही को पुन होय ||**
**गुर धारण सुखराम के || दुज बिन फूले न कोय ||६||**

सभी आत्माओ को एक जैसी आत्मा जानकर पूजने से सबका एक ही जैसा पुण्य होगा ऐसा मत समझो परन्तु गुरू तो ऊँची जाती के लिए बिना सफल नही होगे ऐसा आदि

सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले ।। २३ ।।

**जन होय पूजे भान्ड कूं ।। दे डाको ते गाय ।।**
**वे सबही सुखराम के ।। सिष गुर नरका जाय ।।७।।**

जन(संत)रहते हुए,भांड को याने ढोंग करने वाले वेषधारी को पूजते है और डाकोते( )गाय दान देते है वे सभी उस वेषधारी के शिष्य और वेषधारी गुरू सभी नर्क मे जायेंगे । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले ।। २४ ।।

**रास मंडळ को निंदे वे ।। जमो करावे आण ।।**
**वे सिष गुर सुखराम क्हे ।। सब करमा की खांण ।।८।।**

**गोलो सस्तर बांध के ।। घोडे चड ले कोय ।।**
**दर्सण बिन सुखराम क्हे ।। युं सांगी जन होय ।।९ ।।**

ये सोंग याने वेष लेकर ज्ञान बताने वाले साधू ऐसे है जैसे गोला(राजपूत की रखैल,नीच जाती की स्त्री से पैदा हुआ पुत्र,इसे गोला कहते है।)इस गोलेने शस्त्र हथियार बाँधकर घोडे पर चढ कर गया तो छ: दर्शन के संत के बिना,ये बाकी साधू का सोंग लेकर फिरने वाले जैसे गोला शस्त्र बाँधकर घोडे पर चढकर जाता है,वैसे ही ये साधू का सोंग लेने वाले है । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले ।। २५ ।।

**छे दर्सण बिन बाहेरो ।। ब्राम्हण पेरे भेक ।।**
**वो अेसो सुखराम क्हे ।। छत्री गोलो देख ।।१०।।**

छ: दर्शन के बिना कोई ब्राम्हण का वेष धारण करेगा तो वेष धारण करने वाला क्षत्रिय नही है क्षत्रिय ने रखे हुये स्त्रीसे पैदा हुआवा गोला है । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले ।। २६ ।।

**ब्राम्हण को धन कोन हे ।। का छत्री धन होय ।।**
**माहाजन को सुखराम क्हे ।। सुद्र को क्हो मोय ।।११ ।।**

ब्राम्हण का धन क्या है,वैश्य का धन क्या है,क्षत्रीय का धन क्या है और शुद्र का धन क्या है यह उसे मुझे बताओ ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले ।। २६ ।।

**सुद्र को धन चोपगो ।। महाजन को धन दाम ।।**
**सस्त्र धन रजपूत को ।। युं ब्राम्हण को धन राम ।।१२।।**

शुद्र का धन चौपाये(जानवर)है ।(शुद्र से किसी ने पूछा,की,तुम्हारे पास धन क्या है,वह अपना धन इतनी गाय,इतनी भैस,इतने बैल,इतनी बकरीयाँ,इतनी भेड,यही सब बतायेगा । वह दूसरा कुछ धन,नही मानता है । और किसी ने वैश्य से धन पूछा,तो वह अपने इस्टेट की जो कीमत होगी वही बतायेगा कि मेरे पास इतने करोड की या इतने अरब का धन है ।(वह दूसरे जानवर आदी नही बतायेगा),इसीतरह क्षत्रीय से,तुम्हारे पास कितना

धन है,पूछे तो वह क्षत्रीय अपना धन यही बतायेगा कि मेरे पास ऐसी-ऐसी तलवारे ऐसी ऐसी बंदूके है । मेरे पास इतने घोडे है और ब्राम्हण अपना धन राम(यानी कर्म काण्ड,विद्या,पोथीयाँ,जिन-जिन विद्याओ का उसने अध्ययन किया वह बतायेगा तथा कितना राम नामका स्मरण करता यह बतायेगा यही ब्राम्हण का धन है । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले ।। २८ ।।

**महाजन को धन द्रब हे ।। छत्री को धन गाँव ।।**
**ब्राम्हण को सुखराम क्हे ।। ऋणी हर को नांव ।।**

वैश्य का धन द्रव्य है,क्षत्रीय का धन गाँव(गाँव की जहाँगीरी का पटटा है),इसीप्रकार से ब्राम्हण का धन करनी कर्म और हरी का नाम जपना यह ब्राम्हण का धन है ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले ।। २९ ।।

**ब्राम्हण को किन ऊधरे ।। सुद्र गत किम होय ।।**
**महाजन की सुखराम क्हे ।। छत्री की कहो मोय ।।१३।।**

ब्राम्हण का उद्धार कैसे होगा?और शुद्र की गती कैसे होगी? महाजन की(वैश्य की)गती कैसे होगी?और क्षत्रीय की गती कैसे होगी,यह सब मुझे बताओ?ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले ।। ३० ।।

**सुद्र पुन सुं उधरे ।। छत्री सत्त समाय ।।**
**महाजन सच सुखराम के । ब्राम्हण हर कुं गाय ।।१४।।**

शुद्र का उद्धार पुण्य से होगा और क्षत्रीय का उद्धार सत्त पालने से होगा ।(तीनो वर्णो का और गाय की रक्षा करना,किसी निर्बल मनुष्य के उपर,कोई जुल्म(अत्याचार)करता होगा,तो उससे उसे बचाना यह क्षत्रीय का धर्म है ।)और महाजन ने(वैश्य ने)सब व्यवहार सच्चा रखना, (लेन-देन के व्यवहार मे सच्चाई रखना,तौल मे कम नही तौलना यानी किसी को तौलकर देते समय,कम नही देना और तौलकर लेते समय,किसी का भी माल अधिक तौल कर नही लेना यह वैश्य का धर्म है । इसी से वैश्य का उद्धार होता है । और ब्राह्मण हरनामका गायन (जाप)करेगा तभी ब्राम्हणका उद्धार होगा । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले ।३१।

**सुद्र की जे काय मे ।। महाजन की क्हो मोय ।।**
**सतगुरू कूं सिष बूजीयो ।। ब्राम्हण की किम होय ।।५०।।**

**सुद्र कीजे किरख मे ।। महाजन कि जै बेपार ।।**
**यु ब्राम्हण जै सुखराम के ।। करणी मांय बिचार ।।५१।।**

शुद्र की जय कृषी मे(खेती मे)और महाजन की(वैश्य की)जय व्यापार मे है । इसीप्रकार ब्राम्हण की विजय करनी मे और हरी का नाम लेने मे है । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले ।। ३२ ।।

चार बरण नर नार रे || धन की यहर होय ||
बेद मे सुखराम केहे || कुळ कारण नही कोय ||१५||

इन चारो वर्णो के लोग(स्त्री–पुरूष),(अपना–अपना)धन करने से,वे हर(रामजी ही)हो जाते है । आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि,वेद मे कुल का कोई कारण नही है ||३३||

दुज मर्जादा झूठ सी || तो हर क्युँ राखी पाल ||
हरणांकुश सुखराम क्हे || किम माऱ्यो बिध टाल ||१६||
दुज मर्जादा झूठ सी || तो हणुमन्त राखी कांय ||
सुणज्यो सब सुखराम क्हे || लंका गढ के मांय ||१७||
काचे तं तण बांधियो || हणवन्त कुं दुज जाय ||
वो तागो सुखराम क्हे || उण क्यूं तोड्यो नाय ||१८||
ब्रम्ह समान देवत नही || दुज सो गुरू ना कोय ||
तीन लोक सुखराम क्हे || असंख जुग लग जोय ||१९||
को राखस जन भंजसी || क्युं करमी नर होय ||
वे कळजुग सुखराम क्हे || सुद्र का सिष होय ||२०||

केइक जीव कजलाई ईस्तु || केईक सिलगण लागी ||
कह सुखराम केईक ऐसा || फूंक देत सम जागी ||५८||

कोई एक जीव,उपर से बुझती हुयी आग के जैसे है ।(अन्दर आग रहती है और उपर से बुझती जाती है,इसप्रकार के जीव है ।)और कोई एक जीव,आग पकडने लगती,उस प्रकार के (तुरन्त नयी आग पकडने लगती है,वैसे)है । और कईएक जीव ऐसे है,जैसे आग को फूँक लगाते ही,आग पकड लेती है । इस तरह से तीन प्रकार के जीव होते है । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले || ३४ ||

## || ऊँचे ब्रण का संत बतावण को ग्रंथ ||

नीच जात तूं मत बद मो सुं || समझ सोच मन मांही ||
ब्रम्हा भक्त आद हे हर को || तेरी सुणी न काई ||१||
दुज सुण असल बेष्णव कहिये || ना मे फेर न सारा ||
तीनू लोक सकल सो पूजे || देख सुद्र आधारा ||२||
अर्ध बेष्णव हे सुंण छत्री || सुद्र जात कुं पाली ||
महाजन पाव रे बेष्णव जाणो || गीता कहे हे काली ||३||
तीन बरण अमराव कही जे || दरसण देस दिवाणी ||
चौथो बरण रेत हे सारी || भगतां ठम कवाणी ||४||
चोथो बरण भक्त जे कर हे || तो साय करे हर सोई ||
ज्युं सुण भूप न्याव के ऊपर || भीड रेत की होई || ५||
ने छे पटा रेत नही पावे || उधम करो जुग सोई ||
यूं सुंण सुद्र सन्त नही यारे || साय कियेई क्हा होई ||६||

चाकर एक रीज जे पाई ।। कोइं ।। पुरब जन्म के संन्धे ।।
तो सुण कहा भयो जुग मांई ।। मेर पटायत बंधे ।। ७।।
जग मे राज करे अमराव ई ।। डूम कदे नही होई ।।
जे कोई भूप म्हेर कर देवे ।। तो रहे पलक दिन दोई ।।८।।
यूं सुण भक्त सुद्र की कहिये ।। छाप पडे जुग नाही ।।
हर कूं गाय आप गत जावे ।। मिल दर्सण के मांही ।।९।।
दर्सण बिणा भेष सब पाखन्ड ।। गुर बेमुख हे सारा ।।
यां सुं मिल्या मोख नही पावे ।। सुणलो ज्ञान बिचारा ।।१०।।

**जे सुण मोख हुवे पाखंड सूं ।। तो गुर को बटे न कोई ।।**
**आप आपे मुंढे सारा ।। मिले मोख गत मांई ।।११।।**

यदी पाखण्ड की(धाम,समाधी,चबूतरा,छत्री,पादुका की)पूजा करने से मोक्ष होता,तो फिर गुरू को कोई पूछता भी नही ।(तो फिर गुरू की क्या जरूरत रह गयी?फिर गुरू या सतपुरूष किस लिए चाहिए?)अपने-अपने आपस मे ही सर मुँडा कर(शिष्य बनकर),सभी मोक्ष मे जाकर मिल गये होते और सबकी गती हो गयी होती ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले ।। ३५ ।।

**कळजुग बुध्द भिष्ट सो कीनी ।। ता ते या नही सुझे ।।**
**ब्रम्ह ग्यान की छाया लेले ।। धर्म उथापाँ जूंझे ।।१२।।**

इस कलियुग ने सबकी बुद्धि भ्रष्टकर दी है । बुद्धि भ्रष्ट हो जाने से,यह बात इन्हे दिखाई नही देती है । सभी लोग ब्रम्ह ज्ञान की छाया लेकर,सच्चा धर्म उथापने के लिए जूँझते है ।।।३६।।

**ब्रम्ह ग्यान को देस ना पावे ।। बेमुख हुवे आंधारे ।।**
**के सुण राम सकळ के मांही ।। कहा दर्सणा सारे रे ।।१३।।**

यह सतस्वरुप ब्रम्ह ज्ञान का देश तो इन्हे मिलता नही और ये ब्रम्हज्ञानी सच्चे धर्म से,विमुख होकर,अंधे के जैसे हो गये । ये कहते और सुनते है,कि,राम सब मे है । ऐसा कहते है । तो फिर राम यदी सबमे है,तो फिर दर्शनोके(साधू संतो के)पास क्या है ? ।। ३७ ।।

**गुर म्रजाद भांग के आगे ।। तिरीयो सुण्यो न कोई ।।**
**गीता बेद भागवत गावे ।। सुणो संत सब लोई ।।१४।।**

सतस्वरुपी गुरू की मर्यादा तोडनेवाला,पहले कोई तर गया ऐसा सुना नही । गीता,वेद,भगवत और सभी संत ऐसा कहते है,वह सुनो । ।। ३८ ।।

**राम ध्रम करणी सो साची ।। धिन जे भक्त कमावे ।।**
**दर्सण बिना इष्ट गुर नाही ।। दरगे दाद न पावे ।।१५।।**

राम नामका धर्म और करणी सभी सच्ची और अच्छी है और जिस सतस्वरुपी गुरू का विश्वास भी पूर्ण है । ऐसा जो भक्ती कमाते है वे धन्य है और दर्शन (पाँच तत्व की देह के साथ संत),इस उपरोक्त दर्शन के बिना इष्ट भी नही और गुरू भी नही है दूसरे पाखण्ड की सेवा करने से,आगे दर्गाह मे दाद नही मिलेगी । ।। ३९ ।।

जे हर मेर आप सो बांधी ।। आद अंत ठेराया ।।
सो गुर असल ग्यान मे जोवो ।। ओर रेत जुग भाया ।।१६।।
जळ बिन पलक प्राण नही जीवे ।। तड़फड़ अब मर जावो ।।
ध्रणी बिना सरे नही पलही ।। पवन बिना दुख पाहो ।।१७।।
द्रसण बिना हुसो यूं दुखिया ।। अन्त काल पिस्ता हो ।।
केवळ उरे काम हे यां सूं ।। देह छोड कहां जाहो ।।१८।।
तीन लोक का अे सुण कर्ता ।। ब्रम्हा विष्ण महेसा ।।
जब लग देह धरेगो प्राणी ।। जाय कूण के देसा ।।१९।।
जन्मे मरे जाहां लग जुगमे ।। दर्सण बिन गुर नाही ।।
ब्रम्हा बिष्ण महेस की बांधी ।। आ मरजाद कहाई ।।२०।।
दर्सण मांह जुगे जुग हुवा ।। साध सिध रिष भारी ।।
गिणतां छेह पार नही आवे ।। कब लग कहुँ उचारी ।।२१।।
ऐसा हुवा दर्सणा मांही ।। मांड भांज फिर थापी ।।
मिलीया जाय ब्रम्ह के भेळा ।। हुवा आप सो आपी ।।२२।।

।। अरेल ।।

डेढ अग्या दे जीव जुग के तारिया ।।
असंख जुगा के माह ।। किणे गुर धारिया ।।
तूं आद अंत कू सोझ ।। ग्यान मन दीजीये ।।
अरहाँ हुँता आ सोय ।। सोझ गुरू किजी ये ।। ८१।।
जुग जुग भागी भूक ताहि सूं भागसी ।। अे नित उठ जागे जीव सोही सूं जागसी
जुग जुग तिरीया जीव ।। जिका गुर लार रे ।।
हर हाँ वे ही संग सुखराम ।। अबे ही तार रे ।। ८२।।
नीच गुरा को सिष ।। कहो कुंण ऊधऱ्यो ।।
सो मुझ कहो सुणाय ।। किसे जुग सूं धऱ्यो ।।
नही तर छोडो इष्ट ।। डेढ की तम रे ।।
हर हाँ नही तो काटे खाल ।। गुने: इण जम रे ।।८३
दर्सण को धोकर पाय डेढ कोइ ऊधरे ।।
ज्यूं पारस संग लोहो लागतां सुधरे ।।
उण सोना संग लोहो किनक नही थाय रे ।।
हर हाँ यूं नीच गुरू के संग मोख नही जाय रे ।।८४।।

जब लग माया ब्रम्ह दोय नर जाण हे ।।
अे सुख दुख कलपे जीव ।। लोभ की बाण हे ।।
वे जांहा लग कुल मर्जाद ।। भांगसी कोय रे ।।

**हर हा सो नर क्हे सुखराम ।। सुपस जस होय रे ।। ८५।।**

जीव ब्रम्ह ज्ञान की बाते सुनकर कोई अपना धर्म छोडो मत क्यो कि ब्रम्ह प्राप्त हुए बिना, सिर्फ मुँख से कोरा(बिना अनुभवका)ब्रम्ह ज्ञान बोलना कुछ काम मे नही आता है । ब्रम्ह ज्ञान प्राप्त हो जाने पर सर्वत्र ब्रम्ह ही ब्रम्ह दिखाई देगा । फिर छोटा–बडा या मै और तूँ यह सब ब्रम्ह मे कुछ भी नही रहेगा । फिर ऊँच और नीच जाती,सभी एक ही दिखाई देगी । ऐसा हो गया,तो उसने ही अपनी जाती,वर्ण का धर्म छोडना चाहिए । जीव ब्रम्ह ज्ञान प्राप्त हुए बिना जाती वर्ण का धर्म छोडकर भ्रष्ट मत होओ इसके बारे मे आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि जब तक मनुष्य माया और ब्रम्ह दो मानकर जानता है और उसे सुख–दु:ख होता है और जीव कलपता है,(तलमल करता है,मन मे दु:खी होता है)और लोभ,लालच की आदत है तब तक कोई अपने कुल की मर्यादा तोडेगा,तो वह मनुष्य श्वपच या राक्षस है,ऐसा समझना चाहिए । उसे ब्रम्ह ज्ञानी मत समझो । ।। ४० ।।

**राखे गुर मर्जाद ईष्ट की पाल रे ।।**
**वो कडवा मीठा बेण लखे ऊर गाळ रे ।।**
**वो जब लग वर्णा बीचार अेक ही करत हे ।।**
**हर हाँ वे नर तो सुखराम नरग मे परत हे ।।८६।।**

जब तक गुरू की मर्यादा रखता है और इष्ट मे बंधा हुआ रहता है,अपने इष्ट मे चलता है, अपने इष्ट को पकडकर रहता है और कोई उससे कडवा बोला या कोई उससे मीठा बोला या उसे किसीने गाली दिया,यह सब जिस मनुष्य को हृदय मे मालुम पडता है तब वह मनुष्य,चारो वर्ण(ऊँच नीच की मर्यादा तोडकर सब)एक करने का विचार करता है तो वह मनुष्य ब्रम्ह ज्ञानी नही है नर्क मे पडने वाला है यह समजो । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले ।। ४१ ।।

**बांधे धर्म दुकान टेल नर लेत हे ।।**
**ज्युं आप आस जस काज द्रब नर देत हे ।।**
**रे तब लग निन्दे नीच ध्रम कूळ ऊँच कूं ।।**
**हर हां वा नर कूं सुखराम सुंपे जम भूंच कूं ।।८७।।**

और जिसने अपने धर्म की दुकान बाँधी है और किसी ने कुछ द्रव्य दिया तो ले लेता है और स्वयं दूसरो से आशा रखता है और अपना यश किर्ती होने के लिए दुसरो को धन देता है । नीच जाती का मनुष्य,ऊँचे धर्म की निन्दा करता है,(सबमे एक ही ब्रम्ह है,ऐसा बताकर ब्रम्ह ज्ञानी बनता है और सबमे ब्रम्ह ही ब्रम्ह है ऐसा कहकर,ऊँच और नीच कोई नही है,ऐसा कहता है ।)तो आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि वह मनुष्य ब्रम्ह ज्ञानी नही है उस मनुष्य को अती जुलुम करनेवाले यम दूत के आधीन किया जायेगा

। क्यो कि वह ब्रम्ह ज्ञानी नही है । ।। ४२ ।।

**बेन भाणजी माय ।। दोय कर जाण हे ।।**
**अे सिष साखां की जोड ।। पेख सुख मान हे ।।**
**रे जब लग नीची जात ।। नीच कूळ होय रे ।।**
**हर हाँ कोई साख सुद्र की देख ।। ऊँच नही कोय रे ।।८८।।**

यह मेरी बहन है,यह मेरी भांजी है,इस प्रकार इन्हे अलग अलग जानता है और ये मेरे इतने शिष्य शाखा है,उस अपने शिष्य शाखा की संख्या को देखकर मन मे सुख मानता है,(ब्रम्ह ज्ञानी बहन,भांजी,माँ,पत्नी,इन सबमे एकही ब्रम्ह जानकर,सबको एक ही जानता है । दो नही जानता है । जिसमे चाहे उससे भोग करता है,तो फिर उस ब्रम्ह ज्ञानी को दोष नही लगता है । परन्तु ये जो अपनी बहन,भांजी और माँ को,अलग-अलग समझते है,वे ब्रम्ह ज्ञानी नही है । उन्हे नरकीय दोष लगते है तब तक वह नीच जाती और ऊँचे कुल अलग-अलग रहेगे ही,वह ब्रम्ह ज्ञानी शुद्र होने के कारण,उसकी बात सुनकर,कोई ऊँची जाती के लोग उसके शिष्य मत बनो । ।। ४३ ।।

**जब लग डरपे मन सरम घट माय हे ।।**
**ओ बेण कहे सुभ जोय निरखे राजा अे हे हे ।।**
**रे जब लग ब्रम्ह ग्यान कथ पिस्तावसी ।।**
**हर हाँ वे नर खूनी होय नरक सो जावसी ।।८९।।**

जब तक मन मे दूसरो से डर लगता है और घट मे दूसरो से शर्माता है और किसी से बोलते समय शुभ-शुभ वचन बोलता है,आँखो से राजा को यह राजा है ऐसा देखता है । राजा को बडा मानकर उसका मान सम्मान करता है तब वह ब्रम्हज्ञान कथन करके पछतायेगा । क्यो कि वह ब्रम्हज्ञानी नही है,वह गुनाहगार है,ऐसा ब्रम्ह ज्ञानी नर्क मे जायेगा ।। ४४ ।।

**घड़ी ऐक ब्रम्ह ग्यान पलक सूभ ढूंढवा ।।**
**सो नर इत ऊत बिचल सबे धेः बूडवा ।।**
**जासी सिष गुर सेंग रसातल जीव रे ।।**
**हर हाँ काची मत सुखराम न माने पीव रे ।।९०।।**

एक ही घडी मे ब्रम्हज्ञान की बाते करता और एक ही पल मे शुभ खोजने जाता है वह मनुष्य यहाँ और वहाँ दोनो जगहो पर विचल(ना इधर का नही उधर का),वह डोह मे भवसागर मे डुबेगे ।(वह घडी मे ब्रम्ह ज्ञान की बाते बताता है और घडी मे शुभ यानी अच्छी शोध करने जाता है वह कोई ब्रम्हज्ञानी नही है उसके शिवाय और वह(ब्रम्ह ज्ञान बतानेवाला),ये सभी जीव रसातल मे(छठँवे पाताल मे)जायेगे । आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि, उसका(ब्रम्हज्ञानका)मत कच्चा था(वह पक्का ब्रम्हज्ञानी नही

था),इसीलिए इस ऐसे कच्चे ब्रम्हज्ञान के मत को(बुद्धि को),मालिक नही मानते ।।४५।।

**रे जे उपजे ब्रम्ह ग्यान पीर कौ सिष हे ।।**
**अेसा हुवा तां अेक नीर कहा बिष हे ।।**
**रे जाहां ताहां पांचू एक आपको आप ही ।।**
**हर हां ऊंच नीच गुर सिष नही कोई जाप ही ।।९१।।**

अरे,जिसे ब्रम्ह ज्ञान उत्पन्न हो गया है,वह ब्रम्ह ज्ञानी गुरू और शिष्य को कोई अलग नही मानते है । वह ब्रम्हज्ञानी गुरू और शिष्य को एकही मानता है । ऐसा ब्रम्हज्ञानी बन जानेपर, वह पानी और जहर को एक जानता है । ऐसा ब्रम्हज्ञानी बन जानेपर वह पानी और जहर को एक जानता है और यहाँ–वहाँ पाँच भूत को,अपने स्वयं सरीखा ही जानता है । मतलब सब ब्रम्ह ही ब्रम्ह है ऐसे ब्रम्ह जानता है । उस ब्रम्ह ज्ञानी के लिए,ऊँच और नीच कोई भेद नही है । गुरू और शिष्य कोई अलग नही । सब को ब्रम्ह जानकर,किसी का जाप भी नही करता है मतलब वह ब्रम्हज्ञानी स्वयं को ब्रम्ह जानकर किसी का जाप भी नही करता है । ।। ४६ ।।

**केवल लग हे जात नाव सोई बाजसी ।।**
**अे आठ करम देहे सां प्रत नही भाजसी ।।**
**तो तां ते समझ बिचार राम गुण गाईये ।।**
**हर हां सुद्र को सुण ग्यान भिष्ट नही थाईये ।।९२।।**

परन्तु सतस्वरुप कैवल्य तक नाम भी है,जाती भी है । ये सब(नाम,जाती)कहे जाते । और देह के आठ कर्म(१–ज्ञानावरण,२–दर्शणाकरण,३–मोहनी,४–अंतराय,५–वेली,६–आयु,७–नाम,८–गोत्र)ये देह के आठो कर्म प्रत्यक्ष है,वे आठ कर्म भागकर,कही भी नही जायेगे । इसलिए इसका समझकर,सोच विचार करके,राम नाम का यश वर्णन करो । तुम सुननेवालो, यह शुद्र जाती का मनुष्य ब्रम्ह ज्ञान बताता है,इस शुद्र का ज्ञान सुनकर,भ्रष्ट मत होओ ।४७।

**ऊंच हण के काज नीच ही कसत हे ।।**
**अे करणी करे उपाय हिये आ वसत हे ।।**
**रे थे ऊँचा होय नीच सत्त क्यूं जात हो ।।**
**हर हा रोडी पर प्रसाद बेठ क्यूं खात हो ।।९३।।**

अरे,जो नीची जाती के मनुष्य है,वे तो ऊँचे होने के लिए कष्ट उठाते रहते है,(कष्ट करते है,मेहनत करते है ।)जो नीच है वे ऊँचा होने के लिए अच्छी करणी करके,ऊँचा होने का उपाय करते है और उनके हृदय मे ऊँचा बनने की लालसा रहती है,परन्तु तुम ऊँचे होकर, (इस ब्रम्हज्ञानी का ज्ञान सुनकर),सच मे नीच क्यो हो रहे हो? अरे,तुम(अच्छी घरके होते हुए

भी,नीच घरका प्रसाद किसलिए खाते हो ? ।। ४८ ।।

**ब्रम्ह ग्यानं हे असल सझे नही बावळा ।।**
**ओ लाख बरस मत राख खुनी हुवे रावळा ।।**
**अेक बचन के माय कमाई जाय रे ।।**
**हर हाँ पीछे सब सुखराम ।। करम भुगताय रे ।।९४।।**

यह ब्रम्हज्ञान है तो अच्छा परन्तु अरे पगले यह ब्रम्ह ज्ञान तुमसे साधे नही जाता । इस ब्रम्ह का मत यदी लाख वर्ष तक भी रखा और एक भी वचन मे गलत होकर ब्रम्हज्ञान के विरोध मे गया तो उस ब्रम्हज्ञानी की कमाई व्यर्थ होकर,वह(ब्रम्हज्ञानी)यमराज का गुनाहगार हो जायेगा । लाख वर्ष तक,ब्रम्ह ज्ञान का मत पालते आया और एक बात गलत हो गयी तो उस ब्रम्हज्ञानी की सारी कमाई,व्यर्थ होकर,वह गुनाहगार हो गया),उसे बाद मे(पहले बुरे)उसने (उसने पहले ब्रम्हज्ञान के आधार से जो–जो बुरे कर्म किए होगे वे सभी बुरे कर्म(यमराज) उसे भुगताएगा । ।। ४९ ।।

**ब्रम्ह ग्यान मत धार कहा कोई ब्रम्ह होवसी ।।**
**रे सूते कूं हुलराय कहा कोऊ इधक सोवसी ।।**
**इण मे ओ गुण होय इतो फळ जागसी ।।**
**हर हां इण देहरा सुखराम करम नही लागसी ।।९५।।**

अरे,ब्रम्हज्ञान का मत धारण करके,कोई क्या ब्रम्ह हो जायेगा क्या?(यह जीव तो ब्रम्ह ही है, जीव ने ब्रम्हज्ञान धारण नही किया,तो इन जीवो का,ब्रम्हपन मिट जायेगा क्या? फिर ब्रम्ह ज्ञान धारण करके,अधिक क्या होगा)? अरे,क्या? सोये हुए को हुलराने से,(छोटे बच्चो को निंद आनेके लिए,उसकी माँ या कोई दूसरा,अपने हाथो से हुलराते है,उसको हुलरावना ऐसा कहते है,आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,कि,जो सो गया है,उसे हुलराने से,वह अधिक सो जायेगा क्या?(इसीप्रकार यह ब्रम्ह से आया हुआ जीव,ब्रम्ह का ही है और ब्रम्ह सर्वव्यापी होने के कारण सभी मे व्याप्त है,फिर ब्रम्हज्ञान का मत धारण करके,कही जाकर दुसरा ब्रम्ह ज्ञान का मत धारण करने से,सिर्फ यह इतना ही फल होगा,कि,इस अभी की देह से(शरीर से),किए गये कर्म,उस जीवको नही लगेगे, परन्तु(संचित और प्रारब्ध कर्म,जैसे के वैसे ही रहेगे । ब्रम्ह ज्ञान से सिर्फ क्रियेमाण कर्म यानी इस देह से किए गये कर्म नही लगेगे मतलब ब्रम्हज्ञान धारण करने से सिर्फ यही फल मिलेगा ।) ।। ५० ।।

**जब लग जल्मे जीव ग्रभ मे जाय रे ।।**
**अे तब लग ब्रम्ह ग्यान राख दुख पायरे ।।**
**ओ जे आरे कर लेह अनन्त हुवे आवसी ।।**
**हर हां नटीये सूं सुखराम कहां नर खावसी ।।९६।।**

जब तक यह जीव गर्भ मे आता रहेगा और जन्म लेता रहेगा,तब तक ब्रम्हज्ञान रखकर, ब्रम्हज्ञान रखनेवाले को,दु:ख ही मिलेगा । यह जो आगे का सतस्वरुप ब्रम्ह ज्ञान कबूल कर लेगा तो वह अनन्त बनकर याने सतस्वरुप बन आयेगा,परन्तु सतस्वरुप ब्रम्ह की भक्ती ना करने से आगे क्या लेकर खायेगा मतलब क्या सुख पायेगा । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।। ५१ ।।

**ब्रम्हा बांधी जात वरण कुळ आय रे ।।**
**अब तेरी क्या सुंण पोंच उथाप्या जाय रे ।।**
**ओ राम नांम घड पेल उणाही भाखिया ।।**
**हर हां जात पांत गुण नेम बिधो बिध राखियां ।।९७।।**

यह जाती,कुल,वर्ण की ब्रम्हा की(चार मुख के ब्रम्हा की),बांधी हुअी मर्यादा है । अब तेरी क्या पहुँच है कि तुम(जाती वर्ण और कुल को)उलटाना चाहता है और राम नाम ने देह घडने के पहले जाती–पातीका का गुण और नियम विधी–विधी से रखा । ।। ५२ ।।

**इम्रत नींब खाये सांप मुख दीजीये ।।**
**रे हीरे सूं सिणगार सोने को का कीजीये ।।**
**रे अेमख जळ मे डार वास नही खोय हे ।।**
**हर हां यूं नीच जात इण देह उत्तम नही होय हे ।।९८।।**

**मद मे मिसरी डार लेहेर नही जाय रे ।।**
**युं खर कूं रातब बंध ।। तुरंग नही थाय रे ।।**
**रे जीण संचे को राछ जाग उण छाजसी ।।**
**हर हां नीच ऊँच सुखराम देह लग बाजसी ।।९९।।**

दारू मे मिश्री डाला तो भी उसकी नशा नही जायेगी,नशा होगी ही । जैसे गधे को एक जगह बांधकर उसे रातब(घोडे के खाने के लिए,जो मसाले की औषधी बनाकर देते है,उसे रातब कहते है,वह रातब) गधे को दी गयी तो भी वह गधा घोडा नही बनेगा । अरे,जिस सांचे का हथियार,उसी जगह शोभा देगा । आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि इसीतरह जब देह है तब तक ऊँच और नीच कहा ही जायेगा । ।। ५४ ।।

**ब्रम्ह ग्यान मत लेहे उथापे आय रे ।।**
**सुण सो झूठा जुग मांय बिषे मत खाय रे ।।**
**जे आप हुवे कुळ हीन ओर कुई करत हे ।।**
**हर हां सो दुष्टी सुखराम नर्क मे परत हे ।।१००।।**

तुम ब्रम्ह ज्ञान का मत लेकर,जाती–वर्ण उलटकर सभी एक ही ब्रम्ह है ऐसा कहते हो और यह ब्रम्ह ज्ञानी इस ब्रम्हज्ञान के आधार से विषय रस भोगता है । जो स्वंय तो हीनकुल का (नीच जाती का है और वह दूसरो को भी अपने जैसा नीच जाती का करना

चाहता है । आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि यह ब्रम्हज्ञानी दुष्ट नर्क मे पडेगा और दुजोको भी नर्क मे ले जायेगा । ।। ५५ ।।

**चंनण आक बिलूज सकळ मे आग रे ।।**
**रे यूं हर ब्यापक होय ब्रम्ह सब जाग रे ।।**
**पण बळ जळ कोयला होय तहां लग से रहे ।।**
**हर हां यूं ऊंच नीच सुखराम नीप नेई फेर हे ।।१०१।।**

चंदन की लकडी,आक(मदार)की लकडी और बिलूंज की लकडी इन सबमे आग है । इन सबमे आग होने से चंदन आक और बिलूंज की लकडी एक समान एक जैसे नही होगे वैसे ही सभी मे ब्रम्ह होने से सबकी जाती एक नही होगी । वैसे ही हर सर्वव्यापक है । परन्तु जैसे सभी लकडीयो मे आग होने से सभी लकडीयो की जाती एक नही होगी वैसे ही सभी जाती के मनुष्यो मे ब्रम्ह होने से इन सबकी जाती एक नही होगी ।) जब तक लकडी जलकर कोयला बन जायेगी तब तक लकडी का गुण,अलग-अलग रहेगा । जैसे आक के कोयले से बंदूक की बारूद बनती है । यानी आक की लकडी के कोयले मे,सिर्फ सोरा और गंधक डालने से बंदूक की बारूद बन जाती है परन्तु चंदन की लकडी के कोयले से बारूद नही बनेगी । लकडी का कोयला बन गया तो भी उस लकडी का गुण नही मिटता है । उस कोयले की राख होकर जब जमीन मे मिल जायेगी फिर सभी जाती के लकडीयो की जाती एक होगी । परन्तु जब तक कोयला है तब तक उसकी जाती एक होगी । परन्तु जब तक कोयला है तब तक उसकी जाती अलग-अलग ही रहेगी । इसीप्रकार ऊँच और नीच छुपता नही है । ।।५६।।

**एक चनण को बाग आग सूं जळत हे ।।**
**रे दूजे आक बिलूंज थोर ही बळत हे ।।**
**रे ना वेसो वां तेज बास भी नाय रे ।।**
**हर हां युं ऊंच नीच सुखराम ।। ने पे नही क्या हरे ।। १०२।।**

जैसे चंदन का बाग,आग लगकर जलता है,(उस जलते हुए चंदन के बाग की सुगन्ध छूटती है और दूसरे आक के पेड,बिलुज के पेड,निवडुंग आदी जलते है तो उनमे चंदन के लकडी की आग के जैसा तेज भी नही और सुगन्ध भी नही रहती है । उलट आक का पेड,बिलुंज और निवडुंग जलेगा,तो उसकी दुर्गन्ध छूटेगी आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि,इसी प्रकार ऊँच और नीच के निपजने मे फर्क नही रहेगा क्या ? ।। ५७ ।।

**पीये सब बन राय ।। नीर सो एक ही ।।**
**क्हे राम सब जात ।। धाम हर पेख ही ।।**
**पिण सब ही एक न होय भे ळा नही रेत हे ।।**

**हर हां युं ऊँच नीच सुखराम ।। नीप जांई फेर हे ।।१०३।।**

सभी वनस्पतीयाँ आकाश से आया हुआ एक ही पानी पीती है ।(आकाश से ईमली के लिए अलग और आम के लिए अलग पानी नही पडता है । सभी वनस्पतियाँ एक ही पानी पीती है परन्तु उस पानी का गुण सब पेडो मे अलग होता है । जैसे कटीले पेडो मे काटे लगते है,बिना काँटे के पौधे मे काँटे नही आते है व सभी पौधे मे फल,उस पौधे की जाती के अनुसार लगते है । सभी पौधे मे फल,उस पौधे की जगह अलग बनायी गयी है क्या?सभी पौधे पर पानी पडने का समय भी एक ही है । तो इसी प्रकार सभी जाती के लोग मुँख से राम नाम कहेगे वे राम नाम कहनेवाले राम का धाम और हर देख लेगे परन्तु(सबने राम नाम कहा और हर तथा धाम देख लिया,तो भी)सारी(जाती के लोगो की,जाती एक नही होगी।(और राम नाम कहने वाले,हर(रामजी को)देख लेनेवाले)सब एक ही जगह रहने वाले नही होंगे ।(और सभी एक जाती के नही होगे ।) इसीप्रकार ऊँच और नीच जाती के लोगो के निपजने मे फर्क है । ।५८।

**कीयो नीच को संग ।। ईख इण जाय रे ।।**
**अर लियो भयंग कुळ ऊंच ।। हेर जुग माय रे ।।**
**ये मिलत ही सुख होय ।। दुख सब टलत हे ।।**
**हर हां युं नीच संगी सुखराम ।। आग मे बळत हे ।।१०४।।**

जैसे नीच का(तम्बाखू का)संग गुड ने किया ।(तम्बाखू और गुड मिलाकर गुडाखू बनाते है तो इस गुड ने नीच जाती का संग किया । उस तम्बाखू के संग से गुड आग मे जला । तो यह गुड आग मे जलाने का पदार्थ नही है परन्तु नीच की यानी तम्बाखू की संगती करने से आग मे जलाया गया ।)इसीप्रकार भुजंग ने(सर्प ने)ऊँचे(कुलका यानी चन्दन के पेड का)संग किया तो चन्दन के वृक्ष से मिलकर चन्दन के वृक्ष का संग करते ही,भुजंग को सुख मिला । उस सर्प के अन्दर की विष की ज्वाला मिटकर शांत हो गयी और उसके(सर्प के)शरीर की जलन का दु:ख मिट गया और जिसने नीच की(तम्बाखू की)संगत किया तो वह गुड,आग मे जला । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले ।। ५९ ।।

।। कुन्डल्यो ।।

**ब्रम्ह ग्यान बिन ऊपजे ।। ऊंच नीच संग जाय ।।**
**सो नर सब पिस्तावसी ।। अन्त काल के मांय ।।**
**अन्त काल के मांय ।। मार पडसी शिर भारी ।।**
**या तीना की मर्जाद ।। भांग के करी खुवारी ।।**
**पाप धरम की बासना ।। रहती हे उर माय ।।**
**जब लग झूठो कथत हे ।। ब्रम्ह ग्यान कूं आय ।।१०५।।**

तो पूरा ब्रम्ह ज्ञान उत्पन्न हुए बिना ऊँचे वर्ण(जाती)के लोग नीच लोगो के साथ जायेगे तो वे (ऊँची जाती के लोग)सभी मनुष्य अन्तकाल मे पछतायेगे । अन्तकाल मे उनके उपर बडी भारी मार पडेगी क्यो कि इन्होने इन तीनो की(ब्रम्हा,विष्णु,महादेव की)बांधी हुयी जाती वर्ण की(ब्राम्हण,क्षत्रिय,वैश्य और शुद्र)इन चार वर्णो की,बाँधी हुयी मर्यादा झुठे ब्रम्ह ज्ञान के भरोसे तोडकर ऊँच जाती की खराबी की । ब्रम्हज्ञानी को पाप की और धर्म की वासना,मन मे नही रहती है)और यह जाती वर्ण एक करने वाले ब्रम्हज्ञानी को पाप की और धर्म की वासना जब तक इनके मन मे रहती है तब तक ये झूठा-झूठा ही ब्रम्हज्ञान मुँख से कहते है उन ब्रम्ह ज्ञानी का ब्रम्हज्ञान कहना सच्चा नही है । ।। ५९ ।।

**ब्रम्ह ग्यान जब सांच ।। बिष इम्रत सम जाणे ।।**
**बेटी माता बेन ।। नार सागे कर माणे ।।**
**लेवे सबे सवाद ।। फिर धणीया पे नाही ।।**
**सुभ असुभ कि चाय ।। आस मासो कुछ नांहि ।।**
**जीवण मरण एको गिणे ।। जस कूं जस नही कोय ।।**
**ब्रम्ह ग्यान सुखराम के ।। वां के उर घट होय ।।१०६।।**

ब्रम्हज्ञानी का ब्रम्हज्ञान तो,तभी सच्चा समझना चाहिए कि ब्रम्हज्ञानी विष(जहर)और अमृत को,एक समान समझेगा । और अपनी पुत्री,अपनी माँ और अपनी बहन,इन सबको स्त्रीही जानकर,उनसे भोग करेगा ।(ब्रम्हज्ञानी सबमे ब्रम्ह समझकर,सबको एक मानते है । पुत्री क्या और माँ क्या,बहन क्या और अपनी पत्नी क्या,इन सबको अलग-अलग नही मानते है ।)इन सबसे भोग करते है । और सभी तरह का स्वाद लेते है और फिर उन पर मालकी भी नही रखते है कि यह मेरा है मै इसका मालिक हूँ या नाते मे हूँ ऐसी मालकी नही रखता है ।)शुभ क्या और अशुभ क्या इसकी चाहना भी नही रखता है और इसकी अच्छे की या बुरे की आशा मासाभर भी,कुछ भी नही रखता है,इसका मुझे पाप लगेगा की इसका मुझे आगे अच्छा फल मिलेगा या यह मैने अशुभ(बुरे)कर्म किए है जिसका मुझे आगे बुरा फल भोगना पडेगा । इसकी ब्रम्ह ज्ञानी को कोई चाहना भी नही रहती है और कर्म फल की आशा भी वे ब्रम्ह ज्ञानी मासा भर भी नही रखते है । वे तो संसार मे जिवीत रहना और मरना एक ही समझते है और वे यश तथा अपयश,कुछ भी नही समझते है । जो ऐसे है उनके हृदय मे और घट मे ब्रम्हज्ञान है ऐसा सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है । ।। ६० ।।

**करे जात में ब्याव ।। बेन बेटी परणावे ।।**
**डसे सर्प तब आय ।। सोच चित्त माही ल्यावे ।।**
**तब लग झूठो कथत हे ।। मुख सूं ब्रम्ह ग्यान ।।**
**आप जात मे फंस रयो ।। देहे ओर कूं आंण ।।१०७।।**

और जो कोई अपनी शादी अपनी जाती मे करेगा और अपनी बहन की पुत्र की अपनी जाती वाला देखकर अपनी जाती से ही शादी करेगा और सर्प ने डँस लिया तो मन मे चिन्ता और फिक्र करेगा तो तब तक मुँख से,झूठ ही ब्रम्हज्ञान आकर कहता है । वे ब्रम्हज्ञानी झुठे है,वे स्वंय तो जाती मे बँधे हुए है ।(वे अपनी शादी तो अपनी जाती मे करते है और अपनी बहन तथा पुत्री की शादी अपनी जाती मे कर देते है इस प्रकार वे स्वयं तो जाती मे बँधे हुए है) और दुसरो को ब्रम्हज्ञान बताते है कि सब एक ही ब्रम्ह है । ऊँच–नीच कोई भी नही है,इस प्रकार दूसरो को ज्ञान बताते है,वे झूठे है,ब्रम्हज्ञानी नही है । ।। ६१ ।।

।। अरेल ।।

**रे राम नांव तत्त सार ।। भजन कर लीजीये ।।**
**रे ऊँच नीच को संग काहे को कीजीये ।।**
**सुण पीजे निर्मळ नीर ।। घाट पे जाय रे ।।**
**हर हां बिना घाट सुखराम धका क्यूं खाय रे ।।१०८।।**

अरे सभी ब्रम्ह ज्ञान छोडकर यह राम का नाम तत्त सार है,इसलिये इस राम नाम का भजन कर लो । अरे तुम ऊँचे होकर भी,नीच की संगती किसलिए करते हो?अरे,अच्छे घाट पर जाकर अच्छा पानी पीना चाहिए ।(अच्छी संत संगती मे जाकर निर्मल ज्ञान कान से पीजीए । आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है कि घाट के बिना,ब्रम्हज्ञान मे पानी पीने जाकर भ्रम मे क्यो पडते हो ? धक्का क्यो खाते हो । ।। ६२ ।।

**नीच कथे ब्रम्ह ग्यान ।। तिकन को झूठ हे ।।**
**रे ऊंच कहे कोई आय ।। तांही कूं छूट हे ।।**
**ओ स्वार्थ के लेण रोवणा रोवसी ।।**
**हर हां इण देह छःता सुखराम।। एक नही होवसी ।।१०९।।**

यदी कोई नीच जाती का मनुष्य ब्रम्ह ज्ञान बताकर(सभी जातीयो को एक करना चाहेगा तो) उसका ब्रम्ह ज्ञान झूठा है । क्यो कि वह सभी को अपने जैसा नीच जाती का बनाना चाहता है। परन्तु ऊँचे वर्णका(मनुष्य)ब्रम्हज्ञान बतायेगा तो उस ऊँची जाती के(मनुष्यको)ब्रम्हज्ञान कहने की छूट है । वह नीच जाती का मनुष्य अपने स्वार्थ के लिए ब्रम्हज्ञान बताकर अपना रोना रोता है परन्तु यह देह(शरीर)है तब तक कभी एक नही होगा ।।।६३।।

**खेत खडे सब जात ।। खेत खड बाजसी ।।**
**पण जात एक किम होय ।। छाप किम भागसी ।।**
**अे पांच तत्त की चीज ।। सरब जुग मांय हे ।।**
**हर हां सुण सुभ असुभ सुखराम ।। संग नही थाय हे ।।११०।।**

खेती करनेवाले किसान जो खेती करते है वे सभी जाती के किसान किसान ही कहलायेगे । (उन सभी जाती के किसानो को लोग किसान कहेगे । परन्तु किसानो के सभी जाती के लोग ,किसान कहलाये इसलिए सभी किसानो की जाती,एक नही होगी और उनकी जाती का नाम कैसे मिटेगा?(जैसे किसानो की,किसानो से मँगनी नही होगी और सभी जाती के किसान, किसान कहलाये,इसलिए एक दूसरो के हाथो का,खायेगे भी नही ।)इसीप्रकार इस संसार मे जितनी चीजे है वे सब पाँच तत्वो बनी हुअी है(कोई भी वस्तु,पाँच तत्वो से अलग नही है ।) संसार मे सभी चीजे पाँच तत्वो की बनी हुयी है अच्छी और बुरी चीजे पाँच तत्वो की बनी हुयी है परन्तु अच्छी और बुरी चीजो का,संग नही होगा । जैसे खाने के पदार्थ भी,पाँच तत्वो से ही बने है और गोबर–मिट्टी भी,पाँच तत्वो से बने होने के कारण,एक जगह पर रखा नही जायेगा । इसीप्रकार ऊँच और नीच जाती के मनुष्य पाँच तत्वो के ही होकर,उन सबमे ब्रम्ह है परन्तु उन्हे एक नही किया जा सकेगा । जैसे दूध और मुत्र,ये दोनो ही जल तत्व के होनेके कारण मुत्र और पानी,एक जगह मटके मे नही रखा जा सकता है । इसीप्रकार ऊँच और नीच मनुष्य एक नही होगे ।)तो आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि,शुभ(अच्छे)और अशुभ(बुरे)का संग नही होगा । ।। ६४ ।।

**दर्सण निन्दे नीच ।। उथापे धर्म रे ।।**
**अे बांधे आप दुकान ।। कमावे करम रे ।।**
**आद अन्त का होय ।। आज का नाय हे ।।**
**हर हां वो दुष्टी नर सुखराम ।। उथाप्या जाय हे ।।१११।।**

नीच जाती के ब्रम्हज्ञानी सतस्वरुपी संतो की निन्दा करते है और सतस्वरुपी संतो का धर्म उलटाने का प्रयास करते है और ये अपनी धर्म की दुकान बाँधकर अपने कर्म कमाते है । ब्रम्ह ज्ञान के आधार से लगे वैसे बुरे कर्म करने लगते है तो ये सतस्वरुपी धर्म और सतस्वरुपी संत,आदी अनादी से है ये आज कोई नये नही बने है तो इस आदी से अन्त तक चलने वाले सतस्वरुपी संतो के ज्ञान को ये दुष्ट मनुष्य(ब्रम्हज्ञानी),उलटते जाते है । ।। ६५ ।।

**जब लग सिष गुर होय ।। बन्दगी किजीये ।।**
**सुण पाप धरम की मेर ।। काळ सूं बीजीये ।।**
**तब लग सुभ मर्जाद सत सब बात हे ।।**
**हर हां ओ ब्रम्ळ ग्यान मत धार ।। नरक मे जात हे ।।११२।।**

जब तक गुरू और शिष्य है तब तक गुरू की सेवा करनी चाहिए । पाप की और धर्म की मर्यादा रखकर काल से(मरने से)डरो । तब तक शुभ पाला जाय यह बात सच है परन्तु यह ऐसा ब्रम्ह ज्ञान का मत धारण करके गुरू और शिष्य मे,कम अधिक कुछ भी नही है

और पाप तथा धर्म कुछ भी नही है,काल भी कु छ नही और शुभ(अच्छी)और अशुभ(बुरी)की मर्यादा कुछ भी नही रखता ऐसा मानने वाले ब्रम्हज्ञानी यानी ऐसे ब्रम्ह ज्ञान का मत धारण करके ये कच्चे ब्रम्हज्ञानी नर्क मे जाते है । ।। ६६ ।।

**राम कहे सब जीव कोण के मांहे नही ।।**
**अे रूख राय बन झाड ।। किसे के छाह नही ।।**
**यूं मिटे नही लछ जात ।। फल ही आवीया ।।**
**हर हां नीच ऊंच नही होय राम कुंई गाइयाँ ।।११३।।**

सभी जीव(मनुष्य)मुँख से राम नाम कहते है और यह राम सबमे रमण कर रहा है तो यह राम किस मनुष्य मे नही होगा ।(यह राम सबमे रम रहा है इसलिए सभी मे है)और वृक्ष वनराय और वन के सभी पेडो मे से किसकी छाया नही है इन सबकी परछाँई होती है तो परछाई सभी की होने से उन सभी वृक्षो की जाती एक हो जायेगी क्या?)इसीप्रकार फल भी,सभी जाती के वृक्षो मे लगेगे)परन्तु फल आने से सभी की जाती और लक्षण मिट जायेगे क्या?तो इसी प्रकार नीच जाती के मनुष्य के राम गाने से ऊँच नही होगे । ।।६७।।

अशुभ चीज किणबात सराई आय रे,
तो काहा आ उत्तम वा होय कोण नर खाय रे ,
यूं नीच जात को अम्ग चतुर सी लखियो ,
हर हां नीच कहा भयो सुखराम उत्तम नहि भाकियो ।।
नोट – अरेल नं ८० से ८३ तक का अर्थ नही मिला ।
करो बंदगी सांच ,राम सारा ही गावो ,
रे दरसण बिन गुरू सोझ ,ज्ञान मे मोही बतावो ।
जे अब आगे होय नीच सतगुरू जग मांही ,
हर हां ताका शिष सुखराम,जीव नरक मे जाई ।।
पारस दरसनी संत किण कहे दूज रे ,
अे चार बरण सब आप जुगे जुग पूज रे ।
सुण रूपो हे राजपूत , तांबो हे बाणिया ,
हर हां ओलो हो जस्त ,सुखराम सुदर को जाणिया ।।
तांबो कर कोई जाय ,किनक सो थायरे ,
ओ रूपो तो तत्काल तुरत हो जायरे , ।
पिण करडो लोहो कसार नेक ही जाते है ,
हर हां सो कंचन सुखराम परत नही होत है ।।

**नख चख चोटी बीच ।। जीव तो एक ही ।।**
**पिण कठे किया रे धाम बगत शिर पेक ही ।।**
**रे मुख सुं कर दे ।। एक सब गात रे ।।**

**हर हां हे न्यारा सुखराम ।। झूठ हे बात रे ।।११८।।**

(जैसे सभी जाती के मनुष्यो मे,जीव एक ही है ।) तो अपने शरीर मे,पैरो के नाखून से लेकर चोटी तक,आँखो मे और सारे अवयवो मे जीव एक ही है परन्तु वह जीव शरीर मे किन-किन स्थानो पर रहता है?समय पर देखा जाय,तो सब जगह दिखाई देगा ।(वही जीव मुँख मे, हाथ मे और सारे शरीर मे एक ही है परन्तु सारे शरीर मे एक ही जीव होते हुए भी दूसरे किसी को अपना हाथ लगा तो कोई कुछ नही कहता है और मस्तक किसी को लगा तो कोई कुछ नही कहेगा परन्तु किसी को अपना पैर लग जाने पर उसे पैर लगने से क्रोध आयेगा । जीव तो पैरो मे,हाथो मे सिर मे एक ही था । परन्तु सिर और हाथ लगने पर से मनुष्य नाराज नही होता है वह जीव पैरो मे भी है परन्तु पैर लगने से मनुष्य नाराज होता है । जीव तो पैरो मे हाथो मे माथे मे एक ही था परन्तु मस्तक को हाथ लगने से मनुष्य नाराज नही होता है वही जीव पैरो मे भी था परन्तु पैर लगनेसे मनुष्य नाराज होता है । तो अपने शरीरके ऊँच और नीच अवयवो मे एक ही जीव होते हुए भी उनका गुण अलग है । इसी प्रकार सभी जाती के मनुष्यो मे एक ब्रम्ह है तो भी हाथ पैर और मस्तक की तरह अपनी देह के नीच और ऊँच जाती के अवयवो का गुण अलग-अलग है । खुद एकही मनुष्यके दोनो हाथो का गुण दाहिने हाथ का गुण अलग और बाये हाथ का गुण अलग होता है ।)इसीतरह ये सभी अलग है । सभी को एक कहना झूठी बात है । अपनी-अपनी करणी के अनुसार सभी ऊँच और नीच होते है । ।।७२।।

**पग को पग संग ठीक ।। हात को हात हे ।।**
**ओ गुदा लिंग के संग ।। मुख पर नाँक हे ।।**
**रे प्राण सकळ मे एक ।। दोय नही ठाणिये ।।**
**हरहां पिण संग तो सुखराम ।। बिधो बिध जाणीये ।।११९।।**

पैरो को पैरो का संग ही ठीक है । और हाथो को हाथो का संग है इसी प्रकार गुदा और लिंग के साथ नाक नही है नाक तो मुँख पर है । अरे,प्राण तो(हाथो मे,पैरो मे,गुदा मे,लिंग मे,मुँख मे और नाक मे)सबमे एक ही है,प्राण कोई दो नही है परन्तु संग जिस विधी का उस विधीसे ही होता यह जाणो ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।।७३।।

**नीच जात को संग ।। परथ नही की जीये ।।**
**रे जेवो करता होय तोही नही धीजीये ।।**
**कही किसन सुण देव ।। ग्रंथ मे बात रे ।।**
**हर हां नीच संग सुखराम ।। मोख नही जात रे ।।१२०।।**

इसलिए नीच जाती का संग कभी भी मत करो । वह यदी कर्ता रहा तो भी उसपर विश्वास मत करो । कृष्ण ने यह बात अपने ग्रन्थ मे कहा है,कि,नीच की संगती से कोई मोक्ष मे नही जाता है । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।। ७४ ।।

मिरच संग कपूर ।। सूर शिर लो हरी ।।
आ रूतवन्ती की छाह ।। साप शिर दोवरी ।।
रे लागे हात बिठान ।। उसभ के आय रे ।।
हर हां वा म्हेरी सुखराम ।। मोख नही जाय रे ।।१२१।।

(जैसे कपूर उड जाता है ।)परन्तु उसमे काली मिर्च डाल देने से नही उडता है ।(इसी प्रकार नीच की संगती से कभी भी मोक्ष मे नही जाता है ।)उसी तरह शूरवीर के शरीर पर,लोहे का कवच और टोप रहनेके कारण उसे(देवकन्या)नही ले जाती है । जैसे रजस्वला स्त्री की छाया सर्प के उपर पडी तो वह सर्प उसी समय उसी जगह अंधा हो जाता है ।(इसीतरह ऋतुवंती स्त्री की छाया भी कष्टदायक होती है ।)फिर नीच जाती का गुण मोक्ष मे जाने मे आडे कैसे नही आयेगा । लगे हात बिठान उसभके आय रे । इसका अर्थ समझ मे नही आया ।)वह स्त्री मोक्ष मे नही जाती है । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले ।। ७५ ।।

रिष चमारी देख सराई छोतरा ।
सो इण खूण दे लंघ डेढ घर ओतरा ।
चुणिया मालीफुल उस दसो होय रे
हर हा इण कारण सुखराम बुद्धि दे खायि रे ।।

कांदो घी मे डार ।। हींग कूं लाय के ।।
रे किस्तूरी कूं फुलेल परवाळे आय के ।।
सुण तोही बास न जाय ।। रहत गुण मांय ही ।।
हर हां इऊं नीच जात की छोत ।। परत नही जाय ही ।।१२३।।

जैसे प्याज को घी मे रखा तो भी उसकी दुर्गन्ध मिटती नही । प्याज को हींग मे रखे तो भी उसकी दुर्गन्ध जाती नही । प्याज को कस्तुरी मे रखे,तो भी उसकी दुर्गन्ध दुर नही होती, प्याज को यदी इत्र से धोया तो भी उसकी दुर्गन्ध मिटती नही है । प्याज की दुर्गन्ध का गुण, उसमे रहेगा ही । इसी प्रकार नीच जाती का नीच जाती से छुत मिटती नही है । ।। ७७ ।।

निच किसे गुण होय ।। भेद ओ दिजी ये ।।
रे पीछे सोच बिचार संग सो किजीये ।।
रे जे कर्मा सूं होवे नीच की जात रे ।।
हर हां तो वाँ के संग जोय ।। मोख नही जाय रे ।।१२४।।

अरे तुम मुझे बताओ ये नीच किस गुण के कारण हुए,इसका मुझे भेद दो फिर बाद मे विचार करके उनका संग करो । अरे पहले के बुरे कर्मो के कारण नीच जाती मे जन्म लेकर नीच जाती के हो गये ।(इसी प्रकार तुम भी विचार करके देखो,(कि,इन्होने पहले

नीच कर्म किए, इसीलिए ये नीच जाती के हो गये,तो फिर)इनकी संगती से नीच जाती के हो गये तो फिर इनकी संगती से कोई भी मोक्ष मे नही जायेगा । क्यो कि ये पहले के बुरे कर्मो के कारण नीच जाती मे जन्म लिए है । तो जिसके स्वयं के पहले के नीच कर्म है उस नीच कर्म वाले के संग से दूसरे मनुष्य मोक्ष मे कैसे जायेगे ।) ।। ७८ ।।

**गुर उत्तम कुंई जोय ।। मिधम जे जाणीये ।।**
**रे बाहेर मांहेली संक ।। देही की आणीये ।।**
**तो ओ नर नरका जाय ।। कदे ना सुधरे ।।**
**हर हां अे प्रगट जाणे डेढ तको किऊँ उधरे ।।१२५।।**

गुरू को उत्तम कहते है और गुरू नीच जाती का होने के कारण उस गुरू को नीच मानते है और उस गुरू की बाहर की और अन्दर की देह के(नीचता की,मन मे)शंका लाकर देखते है तो वह मनुष्य(गुरू को नीच जाननेवाला)नर्क मे जायेगा और वह मनुष्य कभी भी नही सुधरेगा । तुम तो तुम्हारे गुरू को प्रगट रूप से शुद्र जानते हो फिर तुम्हारे उद्धार कैसे होगा । ।।७९।।

**चरणामृत ले नाह प्रसादी आय रे**
**अे गुर के घर को नीर पिवे नही जाय रे सुण**
**केता के गुर ऊँच हमारा जाणीये ।।**
**हर हां आ झूठी सुखराम बात क्यूं मानीये ।। १२६।।**

तुम गुरू को शुद्र समझकर उनका चरणामृत नही लेते हो । तुम गुरू को शुद्र समझकर गुरू की प्रसाद भी नही लेते हो और तुम तुम्हारे गुरू को शुद्र समझकर उनके घर का पानी भी नही पीते हो । तुम कहने के लिए तो कहते हो कि हमारे गुरू बडे ऊँचे है इन्हे ऊँचा जाणो ऐसा कहकर बताते रहते हो तो यह तुम्हारी झूठी बात सच कैसे मानी जाय । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले ।। ८० ।।

**अे गुरू कूं करतार राम सो कहत हे ।।**
**अर प्रसादी की बेर देत ना लेत हे ।।**
**रे या अन्तर मे बास नीच की होय रे ।।**
**हर हां तां कारण सुखराम ।। लेहे नही कोय रे ।। १२७।।**

ये गुरू को सृष्टि के कर्तार जैसा कहते है और गुरू को राम के जैसा कहते है,कि,हमारे गुरू राम है और कर्तार है ऐसा मुँख से बोलते है परन्तु तुम्हारा गुरू शुद्र होने के कारण वह तुम्हारा गुरू तुम्हे)प्रसाद भी नही देता है)क्यो कि तुम मन मे गुरू को शुद्र जाती का समझते हो ।यह तुम्हारे अन्तर मे नीच जाती की वासना है जिस से तुम उनका प्रसाद लेते भी नही हो ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।। ८१ ।।

**जे नही जाणे डेढ नीच दिल माय रे ।।**

**तो लो प्रसादी आय पिवो जळ जाय रे ।।**
**अर नही तर केणी झूठ बोत दुख पाव सो ।।**
**हर हां इण खून सुखराम नरक मे जावसो ।।१२८।।**

यदी तुम अपने गुरू को नीच जाती का मन मे नही जानते होगे तो उनकी आकर प्रसाद लो और उनके घर का पानी पीओ । नही तो तुम्हारा गुरू को,उत्तम कहना झूठा है । इस प्रकार ऐसे(मुँख से,गुरू को उत्तम)कहना झूठा है । इस प्रकार ऐसे(मुँख से गुरू को उत्तम कहने और मन मे नीच समझने से,इस गुनाह के कारण,सभी नर्क मे जाओगे । ।।८२।।

**ऊँच नीच के संग छोत जे नाय हे ।।**
**तो मिधम चीज अे छोड़ उत्तम क्यूं खाय हे ।।**
**रे अे पांचा की होय ।। ओर की नाय रे ।।**
**हर हां इंऊ झूठा ये होय ।। सबे नही खाय रे ।।१२९।।**

यदी ऊँच और नीच के संग मे छुत नही होती तो तुम कनिष्ट चीजे छोडकर उत्तम वस्तुएँ क्यो खाते हो(अरे ये सभी उत्तम और मध्यम वस्तुएँ)पाँच तत्व से ही तो बनी है ।(ये कोई पाँच तत्व के अलावा)किसी दूसरे चीज से नही बनी है । तो पाँच तत्वो से बनी हुयी सभी चीजे ये नही खाते है इसीलिए ये झूठे है । ।। ८३ ।।

**नीचे घर अवतार जनमिये नाय रे ।।**
**आ असंक जुगा के बीच भूल बणी मांहे रे ।।**
**सुण ओ ओगण क्या होय अर्थ सो दीजीये ।।**
**हर हां पीछे कुळ सुखराम अेक सो किजिये ।।१३०।।**

अरे,ये अवतार नीच जाती के घर मे आज तक क्यो नही जन्म लिए । अरे यह असंख्य युगो से भूल पडी हुयी है,अरे,(इनमे यह)क्या अवगुण है इसका अर्थ मुझे बताओ फिर बादमे सबका कुल एक करो । ।। ८३ ।।

**जे ऊंच नीच सब एक छोत जे मांय नी ।।**
**तो डेढ घरे अवतार जनमियो कांयनी ।।**
**रे याको करो बिचार पछे संग कीजिये ।।**
**हर हाँ बूजे इम सुखराम ।। अर्थ ओ दीजिये ।।१३१।।**

(अरे,यदी ये)ऊँच और नीच सब एकही है इनमे कोई छुत नही है तो शुद्र के घरमे अवतारो ने क्यो नही जन्म लिया । अरे इस बात का विचार करके फिर इनका(नीच जातीका)संग करो । मै तुमसे पूछता हूँ इसका अर्थ मुझे बताओ ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले ।८४।

**तुम जे तो अेक ग्यान हुं तो कन ना हरे ।।**

**अे बडा बडा अवतार बस्या जुग मायरे ।।**
**सुण वे जाणे कन नाहे ब्रम्ह ओ अेक ही ।।**
**हर हां नीचो गुर बा कोय ।। कियो नही देख ही ।।१३२।।**

अरे उनमे तुममे इतना ज्ञान था या नही कि ये बडे–बडे अवतार संसार मे बसे वे ब्रम्ह एक ही है ऐसा वे यह जानते थे या नही । इन अवतारो ने तो नीच जाती का गुरू किसी ने भी नही किया । यह तो देख लो । ।। ८६ ।।

**अेक ब्रम्ह इण रीत केत हे जोय रे ।।**
**अे सात धात जुग मांय रेत की होय रे ।।**
**पिण गुण न्यारो सुण मोल ।। जगत मे कहत हे ।।**
**हर हां यूं ऊंच नीच सुखराम ।। देह लग रहत हे ।।१३३।।**

ये इस प्रकार से देखकर इस तरह से सबमे एक ब्रम्ह है ऐसा कहते है । जैसे सातो धातु संसार मे मिट्टी से उत्पन्न होती है ।(परन्तु इस एक मिट्टी से उत्पन्न हुए,सातो धातुओ के) गुण और किमत संसारमे अलग–अलग है । तो इसी प्रकार जब तक देह है तब तक ऊँच और नीच इन धातुओ के सरीखा अलग अलग लोग कहेगे ही । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले ।। ८७ ।।

**मिले उलट कर जाय जमीमे घात रे ।।**
**सुण तब अेकी सब होय नही देह गात रे ।।**
**अे पेली कहे सो झूठ ।। अेक नही होवसी ।।**
**हर हां फीटा नर सुखराम लखन मे खोवसी ।।१३४।।**

जैसे सातो प्रकार की धातुएँ मिट्टी से पैदा हुयी वे पुन: घिस–घिस कर जमीन मे एक हो जायेगी इसी प्रकार ऊँच और नीच मनुष्य का देह नही रहेगा तब सब एक हो जायेगे परन्तु ये पहले ही सब एक है ऐसा कहते है तो कहने वाले झूठ है । यह फिटा(अपयशी)मनुष्य समझने मे मनुष्य देह गँवा देते है ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।। ८८ ।।

**जब लग दीसे देह ।। जक्त के मांय रे ।।**
**ओ तब लग काच कथीर ।। ओर नही काय रे ।।**
**सुण भावे गेणो होय ।। उजाळो काय हे ।।**
**हर हाँ पिण देह लग तो सुखराम ।। नीच गुंण मांय हे ।।१३५।।**

जब तक यह शरीर संसार मे दिखाई दे रहा है तब तक काँच और कथीर(ये सभी धातु अलग –अलग नही है क्या?)सुन गहना कैसा भी रहा उसको उज्वल करते है ऐसेही शरीर को उत्तम संस्कारी बनाते आता परंतु जब तक देह है तब तक उसमे नीच जाती का गुण रहेगा ही ऐसा

आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । || ८९ ||

|| कुन्डल्यो ||

**अरथ आद सूं बण रहया || अब कर कीया न होय ||**
**न्यारा करके संत जन || कहता हे जुग कोय ||**
**कहता हे सब जुग कोय || सुभ उसभ सब जोई ||**
**कहे ग्यान मे नीच || तांहे को दोस न कोइं ||**
**सुण लीज्यो संसार जन || बुरो न मानो कोय ||**
**अरथ आद सुखराम क्हे || अब कर किया न होय || १३६||**

इसका यह अर्थ तो आदी से ही बना हुआ है अब नया बनाने से नया नही बनता है । वह अर्थ जो संतजन है वे संसार मे अलग करके बताते है । वे शुभ और अशुभ सब देखकर कहते है और कोई ज्ञान मे नीच को नीच कहेगा तो उसका उसे(नीच कहनेवाले को)कुछ भी दोष नही लगेगा । यह सब संसार और जन(संत)सभी सुन लो । इसमे नीच का नीच कहने से कोई बुरा मत मानो क्यो कि यह आदी से है अब नया बनाने से बनता नही है । || ९० ||

|| साखी ||

सुद्र सुद्र गुर करे || ज्यारो भलो न होय ||
कहो केता हंस उधऱ्या || बरण बतावो मोय || १३७||
गंगा बहती अटक सी || दर्सण घटसी मान ||
सुद्र गुर सुखराम क्हे || अे कलजुग अे नाण ||१३८||
बुध हीणा बेकार अे || कळजुग पेठो माय ||
ता कारण सुखराम क्हे || गुर सिष सुदर थाय ||१३९||
बेद भागवत पुराण रे || गीता हम ली जोय ||
पण सुदर गुरू सुखराम क्हे || म्हे सुणीयो नई कोय ||१४०||
सुदर सुदर गुरू करे || ओ तो अनरथ होय ||
सुदर गुर को सिष रे || अेक न निपजो कोय ||१४१||
तीन लाख एक पीर ने || जीव प्रमोद्या आय ||
तिका सब सुखराम क्हे || गया नरक के माय ||१४२||
सिख साखां करतूत को || सुण कारण नही कोय ||
किणीयक पल सुखराम क्हे || धन चोरां केई होय ||१४३||
**तीन रूत सुखराम क्हे || न्यारी बरते आय ||**
**तो बरणा मरजाद रे || यां क्यूं झूठी थाय ||१४४||**

तीन ऋतु(जाडा,गर्मी,बरसात)ये अपना-अपना गुण अलग-अलग देते है तो फिर यह चार वर्ण की मर्यादा झूठी कैसे होगी । || ९१ ||

**बेद भेद सुं ऊपना || भेद बेद मे होय ||**
**अे दोनू सुखराम क्हे || प्राण देहे ज्युँ जोय ||१४५||**

जो वेद है वह भेदसे उत्पन्न हुआ है । और जो भेद है वह वेद मे है । वेद और भेद ये दोनो वृक्ष मे बीज और बीज मे वृक्ष की तरह है इसीप्रकार प्राण और देह मे है । ।। १२ ।।

ब्राम्हण को पूजे नही ।। आव भाव नही कोय ।।
से सब ही सुखराम क्हे ।। गुर बेमुख नर होय ।।१४६।।
आद अज्ज पेला ।। ब्राम्हण हे गुर देव ।।
फेर आद सुखराम क्हे ।। पार ब्रम्ह की सेव ।। १४७।।
ब्राम्हण बिन गुर एम हे ।। ज्यूँ हरजी बिना देव ।।
अर सुदर गुर सुखराम क्हे ।। सुण मोगा की सेव ।।१४८।।
ब्राम्हण बिन गुरू अेम हे ।। ज्यूं चंदन बिन ढाक ।।
सुदर तो सुखराम क्हे ।। सेमळ अेरंड आक ।।१४९।।
सुदर भेक धर हर रटे ।। तो भी गुर नही काय ।।
सुखराम लोहा जे कनक व्हे ।। तो ही पारस कहिये नाय ।।१५०।।
सुदर करणी बोहो करे ।। तोई गुर नही होय ।।
सुखराम जाट तर वारियो ।। तो ही राजा कहे न कोय ।।१५१।।
राजा मानी खुवांस कूं ।। तो काहा राणी होय ।।
इऊँ सुदर सुण सुखराम क्हे ।। गुर नही कहिये कोय ।।१५२।।
भक्त किया सुं सुदर रे ।। भक्त बाजसी लोय ।।
पिण गुर पदवी सुखराम के ।। ब्राम्हण बिन नही कोय ।। १५३ ।।
चाकर सब ही बाजसी ।। सुण कियां चाकरी जोय ।।
पिण ठाकुर तो सुखराम क्हे ।। बिन छत्री नही होय ।।१५४।।
ब्राम्हण बिन सन्यास नही ।। ना ब्राम्हण बिन जोग ।।
बिन छत्री सुखराम क्हे ।। नही करम को भोग ।।१५५।।
ब्राम्हण बिन गुर ध्रम रे ।। फळे न फूले कोय ।।
हर वायक सुखराम क्हे ।। भागवत मे जोय ।।१५६।।
ब्राम्हण होय सन्यास ले ।। धरे ब्रम्ह को ध्यान ।।
वा सर भर सुखराम क्हे ।। नही तीन लोक मे ज्ञान ।।१५७।।
ब्राम्हण हुय लव लीन हुवे ।। पूरण पद सुं कोय ।।
वां सर भर सुखराम क्हे ।। ब्रम्हा शिव नही होय ।। १५८।।
छ दरसण बेराग रे ।। अे ब्रम्हा अंस जोय ।।
या कारण सुखराम क्हे ।। सतगुर पदवी होय ।।१५९।।
सुदर गुर सिर धार के ।। पूज्यां ओ पुन होय ।।
ज्यूँ विरखा सुखराम क्हे ।। बिन तरवर से जोय ।।१६०।।
ना दरसण ना वरण रे ।। ता कूं गुर केह कोय ।।
वा मे सुण सुखराम क्हे ।। कळ जुग पेठो जोय ।।१६१।।
दरसण बिन अे भगत रे ।। सुदर सुंई निकाम ।।
ना ग्रेह पुन सुखराम क्हे ।। ना लिव सिंवरे राम ।।१६२।।
आज पेल सुखराम क्हे ।। सुदर भक्त न होय ।।
कहो केता हंस तारीया ।। बरण बतावो सोय ।।१६३।।
सुदर ग्रेहे मे नीपना ।। कोई भेक धार के नाय ।।

आज पेल सुखराम क्हे ।। देखो अरथां मांय ।।१६४।।
अफरी पडी या बात रे ।। ज्यां जिण कीवी जोय ।।
वां सही नही सुखराम क्हे ।। सुरपुर नर पुर कोय ।।१६५।।
हर खर धारे चीज सो ।। वा प्रगटे सत्त होय ।।
दूजी सुण सुखराम क्हे ।। ओगण गारी जोय ।।१६६।।
प्रथम तो निपजे नही ।। सुदर भेक बणाय ।।
जो निपजे सुखराम क्हे ।। तो फोरो सो जुग मांय ।।१६७।।
ज्यूं कसबो कर साण रे ।। युं सुदर को भेक ।।
ता कारणे सुखराम क्हे ।। फाट न निपजे देख।।१६८।।
जे सागर खारो भयो ।। तो भी हीरा माय ।।
सुखिया मीठी सेत हे ।। कौ विकली छाने खाय ।।१६९।।
नार पदमणी आण के ।। राणी करे न कोय ।।
मिण कुं सुण सुखराम क्हे ।। जोगी धारे जोय ।।१७०।।
कागद हुवे टाट को ।। उँसो जलम मिटाय ।।
नीच परी सुखराम क्हे ।। नीचां सूर बर जाय ।।१७१।।
सी सो सुत बिन गालियां ।। चांदी कदे न होय ।।
इऊं सुदर सुखराम क्हे ।। प्राण दे ऊंच न कोय ।।१७२।।
सुदर गृह मे पाके नही ।। तो सिष क्युं निपज्या नाथ ।।
सुण ज्यो सब सुखराम क्हे ।। ग्यान पुकाऱ्या जाय ।।१७३।।
सुखराम क्हे ओ अर्थ रे ।। प्रगट हे जुग मांय ।।
नीच करम स सो करे ।। सो डेढां घर जाय ।।१७४।।
तत्त भेद खट जीवां शिर ।। धर दीयो ग्यान बिचार ।।
सेवा पूजा बंदगी ।। भिन भिन सबे ऊचार ।।१७५।।

।। कुन्डल्यो ।।

डेढ किसे कहो सिष कियो ।। असंख जुगा के मांय ।।
च्यार वरण नर नार मे ।। को ताऱ्यो किण आय ।।
को ताऱ्यो किण आय ।। सोध वो मोय बतावो ।।
के पाखंड कर दूर ।। कांय निरणो कर लावो ।।
सुखराम हुवा सोइ होवसी ।। अण हुवा नही होय ।।
डेढ किसे क्हो सिष कियो ।। आद अंत मध जोय ।।१७६।।
असंख जुग आगे गया ।। फेर असंख अब जाय ।।
डेढ मोख नही पोंचियो ।। आज लग जुग मांय ।।
आज लग जुग मांय ।। ज्ञान सोझर गम कीजे ।।
किसा डेढ को पंथ ।। पटक चौड़े सुण दीजे ।।
सुखराम क्हे यो न्याव हे ।। करजो चित्त लगाय ।।
असंख जुग आगे गया ।। फेर असंख अब जाय ।।१७७।।
गधो तुरंग नही होय ।। त्याग रोडी को कीया ।।
हंस न होवे काग ।। चाँच भिष्टा नही दीया ।।
स्याल न होवे सिंघ ।। बेररू चांबन खाया ।।

नीम न मीठा होय ।। सिंच गुळ खान्ड न पाया ।।
सुखराम क्हे इम सुद्र संत नही होय ।।१७८।।
घाटम मेणो होय ।। नामदेव छीपो भाई ।।
रांको बण्यो कुंभार ।। भिल्लन उत्तम आई ।।
नानक खत्री होय ।। जनम दादू वहां पायो ।।
मुसलमान घर जनम ।। संत कबीर कहायो ।।
सुखराम क्हे ये उत्तम सो ।। बाल मीन बिन जोय ।।१७९।।
मांखी माळ बणाय ।। नेक उत्तम न होई ।।
साप शिश मिण जाण ।। जात गुण मिटे न कोई
चंदन हींग लपेट बास वांकी नही जावे ।।
स्वान पालखी बेठ उत्तम होय नेक न आवे ।।
जतन क्रोड कितनी करे ।। सुदर संत न होय ।।१८०।।
नही हुवे मांतंग बंस सब खाय ।।
हीरा समदाँ निपजे, नाल खाल मे नांय ।।